डाक पंजीयन नं. 99/2021-23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.adhuniksamachar.com

PG-5

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

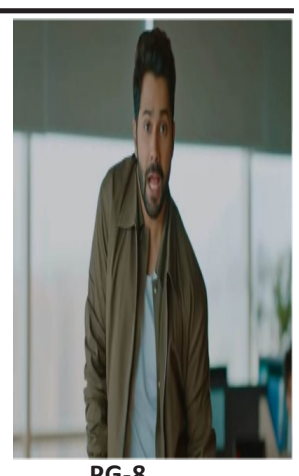

PG-8

सिनेमाः-वरुण धवन ने अल्लू अर्जुन के श्रीवल्ली स्टेप को किया कॉपी

वर्ष -08 अंक -177 | प्रयागराज, मंगलवार, 27 सितम्बर, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

एग्जिट पोल में जार्जिया मेलोनी के गठबंधन को स्पष्ट बहुमत

रोम। इटली में रविवार को आम चुनाव के मतदान समाप्त हो गए हैं। मतदान के बाद आए एग्जिट पोल में पीएम पद की उम्मीदवार जार्जिया मेलोनी की पार्टी ब्रदर्स आफ इटली सबसे ज्यादा वोट पाती दिख रही हैं। जाजिच्या के नेतृत्व में दक्षिणपंथी गठबंधन संसद में स्पष्ट बहुमत के लिए तैयार दिख रहा है। मतगणना के बाद अगर एग्जिट पोल सही साबित होते हैं तो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इटली को पहली महिला प्रधानमंत्री मिलने की उम्मीद है। देश के एक प्रमुख टीवी चैनल आरएआई के एक एक्जिट पोल में कहा गया है कि कनसर्वेटिव पार्टी का गठबंधन जिसमें माटेओ साल्विनी की लीग और सिल्वियो बर्लुस्कोनी की फोर्जा इटालिया पार्टी भी शामिल है उसे बहुमत मिल रहा है। गठबंधन को 41 फीसद और 45 फीसद के बीच जीत हासिल की है। यह संख्या संसद के दोनों सदनों के नियंत्रण की गारंटी के लिए पर्याप्त है।

इमरान खान बोले- योग्यता के आधार पर की जानी चाहिए पाकिस्तान के नए सेना प्रमुख की नियुक्ति

पाकिस्तान । पाकिस्तान में नए सेना प्रमुख की नियुक्ति के मसले पर जारी सियासी घमासान थमने का नाम नहीं ले रहा है। पूर्व प्रधानमंत्री और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के प्रमुख इमरान खान ने रविवार को खैबर पख्तूनख्वा के कराक में एक रैली को संबोधित करते हुए पाकिस्तान के नए सेना प्रमुख की नियुक्ति को लेकर एक नई बात रख दी। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के नए सेना प्रमुख की नियुक्ति योग्यता के आधार पर की जानी चाहिए। जियो न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार इमरान खान ने विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी पर पलटवार करते हुए कहा कि मैंने कभी भी अपनी पसंद के सेना प्रमुख की नियुक्ति करने की कोशिश नहीं की। हम चाहते हैं कि पाकिस?तान के नए सेना प्रमुख का चयन योग्यता के आधार पर किया जाना चाहिए। दरअसल बिलावल भुट्टो जरदारी ने इमरान खान पर आरोप लगाया था कि पूर्व पीएम अपनी पसंद का सेना प्रमुख नियुक्त करना चाहते थे।

नितिन गडकरी बोले- आजादी के समय जो नीति अपनाई गई

(आधुनिक समाचार सेवा)

जयपुर। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि 1947 में आजादी के समय जो नीति देश ने अपनाई थी, आज

उसी का परिणाम भुगतना पड़ रहा है। विश्व में मार्क्सवादी, समाजवादी और पूंजीवादी विचारधारा लगभग समाप्त हो गई और अब अंत्योदय विचारधारा स्वीकार की जा रही है। वह रविवार को जयपुर जिले के धानक्या में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के मौके पर आयोजित समारोह में बोल रहे थे। गडकरी ने कहा कि इस देश के 80 प्रतिशत लोग गांव में रहते थे, लेकिन अब करीब 35 प्रतिशत लोग गांव से शहरों की ओर आ गए हैं। इस कारण शहरों में भी आबादी बढ़ गई है। कई शहरी समस्याएं भी सामने आ रही हैं। गांव से लोग पलायन कर रहे हैं, लेकिन ऐसा क्यों हो रहा है और इसके पीछे क्या कारण है, उसे समझना होगा । गडकरी ने कहा कि 1947 में जो नीतियां अपनाई गईं, वही इसका सबसे बड़ा कारण हैं। आज देश की जीडीपी ग्रोथ में 24 प्रतिशत उत्पादन का योगदान है। 54 प्रतिशत के करीब सेवा सेक्टर और 12 प्रतिशत कृषि क्षेत्र का है। अंत्योदय विचारधारा में उपाध्याय ने इसके लिए आर्थिक और सामाजिक समानता की बात कही थी। गडकरी ने कहा कि राजनीति सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का एक प्रकल्प है। राष्ट्रवाद का विशेष ध्यान रखना होगा,क्योंकि देश को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से मजबूत होने के साथ एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित किया जाना जरूरी है। गडकरी ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू देश में उत्पादन बढ़ाने पर जोर देते थे तो वही महात्मा गांधी और उपाध्याय उत्पादन बढ़ाने के साथ ही ज्यादा से ज्यादा लोगों का इसमें शामिल करने पर जोर देते थे ताकि रोजगार में बढ़ोतरी हो।

पाकिस्तान के वित्त मंत्री ने दिया इस्तीफा, मरियम नवाज ने पीएम शहबाज से की थी शिकायत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के वित्त मंत्री मिफ्ताह इस्माइल ने पद से त्यागपत्र दे दिया है। एक्सप्रेस ट्रिब्यून ने लिखा है कि आम चुनाव से पहले राजनीतिक जमीन फिर से हासिल करने के लिए पीएमएल-एन के वरिष्ठ नेता इशाक डार को

नया वित्त मंत्री बनाया जाएगा। इससे पहले इंटरनेट मीडिया पर मरियम नवाज का कथित रूप से एक आडियो क्लिप प्रसारित हो रहा था। इसमें वह प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ से वित्त मंत्री की शिकायत कर रही थीं। वह शहबाज से कह रही थीं-चाचा, अमेरिकी डालर मजबूत हो रहा है और मिफ्तार जिम्मेदारी तक लेने के लिए तैयार नहीं हैं। इसके बाद वह इशाक डार की प्रशंसा करने लगीं। कहा, डार साहब का चीजों पर नियंत्रण है। उनको पता है कि क्या करना है, लेकिन मिफ्ताह नहीं जानते। बातचीत में वह शहबाज शरीफ को पेट्रोल की कीमत बढ़ाने का भी सुझाव दे रही थीं।

पीएम मोदी ने अपने इजराइली समकक्ष को यहूदी नववर्ष की शुभकामनाएं दी

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। इजराइल में लोग यहूदी नववर्ष रोश हाशनाह मना रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अपने इजराइली समकक्ष याइर लापिद और इजराइली नागरिकों को यहूदी नववर्ष रोश हाशनाह की शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री मोदी

ने ट्वीट कर कहा- मेरे मित्र याइर लापिद इजराइली नागरिकों के साथ साथ दुनियाभर में मौजूद यहूदी समुदाय को रोश हाशनाह की हार्दिक बधाई। पीएम मोदी ने कहा- ईश्वर करें कि नव वर्ष सभी के लिए बेहतर स्वास्थ्य, शांति एवं समृद्धि लेकर आए। रोश हशनाह का अर्थ है 'वर्ष का प्रमुख'। मालूम हो कि यह दो दिवसीय उत्सव है। हर साल इसे शरद ऋतु में मनाया जाता है। यह यहूदी उच्च पवित्र दिनों की शुरुआत का प्रतीक है। यह वर्षों से चली आ रही परंपरा है। इस दौरान प्रार्थनाएं आयोजित की जाती हैं। रोश हाशनाह का पर्व मनाने के लिए लोग पकवान भी बनाते हैं। साथ ही सींग से बना पारंपरिक शोफर नामक वाद्ययंत्र बजाया जाता है। भारत में इजराइल के राजदूत नाओर गिलोन ने भी अपने सहयोगियों के साथ रोश हाशनाह का पर्व मनाया। उन्होंने ट्वीट कर कहा- भारत में हमने अपने सहयोगियों के साथ रोश हाशनाह मनाने की परंपरा को कायम रखा है। आप सभी को रोश हाशनाह की हार्दिक शुभकामनाएं! इस बीच इजराइल के उत्तरी वेस्ट बैंक में रात भर चली छापेमारी के दौरान इजराइली सैनिकों ने एक संदिग्ध फिलिस्तीनी बंदूकधारी का एनकाउंटर कर दिया। इजराइली सेना की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि उसने नब्लुस शहर के पास एक ऑपरेशन के दौरान कार और मोटरसाइकिल पर सवार सशस्त्र लोगों के एक समूह को देखा। इस मुठभेड़ में एक आतंकी मारा गया। एक स्थानीय उग्रवादी समूह द डेन ऑफ लायंस ने कहा कि उसका एक सदस्य इस मुठभेड़ में मारा गया।

ईरान में महसा की मौत के बाद सड़कों पर उतरे लोग

निकोसिया। ईरान में महसा अमिनी की मौत के बाद लोग सड़कों पर उतर आए हैं। पुलिस हिरासत के बाद, महसा अमिनी की मौत से ईरान सरकार को भारी विरोध का सामना करना पड़ रहा है। बता दें कि महसा अमिनी को हिजाब पहनने से इनकार करने के बाद, पुलिस ने हिरासत में लिया था। आरोप है कि पुलिस ने उसके साथ मारपीट की, जिससे वह कोमा में चली गई और उसकी मौत हो गई। महिला की मौत के बाद, पिछले एक हफ्ते से अधिक समय से ईरान के 31 प्रांतों के 80 से अधिक कस्बों और शहरों में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। इस दौरान कई लोगों की मौत हुई है और 1200 से अधिक लोग गिरफ्तार हुए हैं। बता दें कि प्रदर्शन के दौरान, सड़कों पर जमकर हिंसा हो रही है। विरोध-प्रदर्शन में प्रदर्शनकारियों और सशस्त्र बलों के बीच संघर्ष में अब तक कम से कम 41 लोगों की मौत हुई है। जानकारी के अनुसार, महसा अमिनी को 13 सितंबर को तेहरान मेट्रो स्टेशन से निकलते वक्त गिरफ्तार किया गया था। महसा अमिनी और अन्य महिलाओं को इसलिए गिरफ्तार किया गया, क्योंकि इनलोगों ने हिजाब कानून का पालन नहीं किया और इसे पहनने से इनकार कर दिया था। महसा अमिनी सिहत अन्य को पुलिस अपने साथ ले गई। इसके बाद, परिवार का दावा है कि महसा के साथ मारपीट की गई, जिससे वह कोमा में चली गई। हालांकि अधिकारियों ने कहा कि महसा की मौत प्राकृतिक कारणों से हुई है।

दिग्विजय सिंह के बड़बोलेपन के कारण ही कांग्रेस की दुर्गति

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर और भाजपा नेता सुशील कुमार मोदी ने देशविरोधी गतिविधियों में शामिल पीएफआइ का समर्थन करने पर कांग्रेस और राजद जैसे विपक्षी दलों का कड़ा विरोध दर्ज किया है। अनुराग ठाकुर ने कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह के पीएफआइ और संघ की तुलना करने वाले बयान पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि कांग्रेस की आज यह दुर्गति दिग्विजय सिंह के बड़बोलेपन के कारण ही हुई है। इसीतरह भाजपा के राज्यसभा सदस्य सुशील कुमार मोदी ने कहा कि कांग्रेस सदस्य दिग्विजय सिंह को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और पीएफआइ की तुलना करने के लिए शर्मसार होना चाहिए। अनुराग ठाकुर ने रविवार को दिग्वजय सिंह पर निशाना साधते हुए कहा कि जब आतंकियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जा रही हो और कोई आतंकवादी ओसामा को ओसामा जी कहे तो इसे वोट बैंक के लिए की जाने वाली बयानबाजी समझना जाहिए। कांग्रेस और गांधी परिवार पर कटाक्ष करते हुए ठाकुर ने कहा कि यूपीए सरकार के समय में सरकार सात रेसकोर्स मार्ग के बजाय दस जनपथ से चलती थी। देश की सुरक्षा को मजबूत करने का दावा करते हुए अनुराग ठाकुर ने कहा कि उनकी सरकार आंतरिक और बाह्य सुरक्षा को मजबूत करने और विकास के लिए दिन-रात मेहनत कर रही है। घुसपैठ और आतंकियों के खिलाफ कड़े कदम उठाए जा रहे है। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35ए हटाए जाने के बाद से वहां तेजी से विकास हो रहा है। इसीतरह पूर्वोत्तर के राज्यों में भी सड़क से रेल मार्ग और हवाई पट्टी बनाने का काम बहुत तेजी से हुआ है। केंद्रीय मंत्री ने राजद के शिवानंद तिवारी और एआइएमआइएम के असदुद्दीन ओवैसी पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा कि बिहार में जंगल राज लौट आएगा।

लंदन में पाकिस्तान की मंत्री मरियम नवाज की हुई फजीहत

प्रदर्शनकारियों ने घेरकर लगाए 'चोरनी-चोरनी' के नारे

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की सूचना मंत्री और नवाज शरीफ की बेटी मरियम औरंगजेब की लंदन में फजीयत का एक वीडियो वायरल हो रहा है। एक कॉफी शाप में गई मंत्री को वहां रह रहे पाकिस्तानियों ने घेर लिया और उनके खिलाफ नारे लगाए। बताया जा रहा है कि ये लोग पाकिस्तान में मची बाढ़ की तबाही से बेहद दुखी थे और उन्होंने करते हुए सड़कों पर 'चोरनी, चोरनी' के नारे भी लगाए। डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, इस बीच मरियम के साथ मौजूद एक मंत्री ने बीच बचाव किया और स्थिति को संयम के साथ संभाला। रिपोर्ट के अनुसार मरियम को पूर्व पाक पीएम इमरान खान के समर्थकों ने एक दुकान में घेरा था। वीडियो में एक महिला औरंगजेब से कह रही थी कि वहां

इसी कारण मरियम की आलोचना भी की। इंटरनेट पर वायरल वीडियो में विदेश में रह रहे पाकिस्तानियों को मंत्री मरियम औरंगजेब की परिक्रमा करते देखा गया। एआरवाई न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार वे पाकिस्तान में बाढ़ की तबाही के बीच विदेश यात्रा करने के लिए मंत्री की आलोचना कर रहे थे। पाकिस्तानी लोगों ने प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की बेटी मरियम का पीछा टेलीविजन पर बड़े-बड़े दावे किए जा रहे हैं लेकिन यहां वह सिर पर दुपट्टा नहीं रखती है।पाकिस्तानी पत्रकार सैयद तलत हुसैन द्वारा साझा किए गए वीडियो का जवाब देते हुए औरंगजेब ने कहा कि वह पीटीआई अध्यक्ष इमरान खान की नफरत और विभाजन की राजनीति से बेहद निराश है। उन्होंने कहा कि इमरान की इसी राजनीति के चलते विदेशों तक पाकिस्तानी भड़क रहे है।

पाकिस्तान को एफ-16 लड़ाकू विमानों के पैकेज पर यूएस की सफाई

वाशिंगटन। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को लड़ाकू विमान एफ-16 के उच्चीकरण के लिए 45 करोड़ डालर (3,651 करोड़ रुपये) की धनराशि मंजूर करने पर सवाल

उठाए हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान और अमेरिका के संबंधों में अमेरिकियों का हित नहीं है। भारतीय-अमेरिकन समुदाय की ओर से रविवार को वाशिंगटन में आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा, 'इस्लामाबाद और वाशिंगटन के बीच संबंधों से ना तो पाकिस्तानियों का भला है और ना ही अमेरिकियों का। उन्होंने आगे कहा, 'अमेरिका को पाकिस्तान से अपने संबंधों पर सोचना चाहिए कि उसे इससे क्या हासिल हुआ।'जयशंकर ने कहा, 'मैं ये बात इसीलिए कह रहा हूं क्योंकि ये आतंकवाद विरोधी सामान है। जब आप एफ-16 की क्षमता जैसे विमान की बात कर रहे है... हर कोई जानता है, ये आप भी जानते हैं कि विमानों को कहां तैनात किया गया है और उनका क्या उपयोग किया जा रहा है। आप ये बातें कहकर किसी को बेवकूफ नहीं बना सकते बता दें कि अमेरिका की जो बाइडन सरकार ने पाकिस्तान को एफ-16 लड़ाकू विमानों के उच्चीकरण के लिए 45 करोड़ डालर की राशि मंजूर की है। भारत की ओर से सवाल उठाए जाने पर अमेरिका ने इस पर सफाई दी थी। अमेरिका ने अपनी सफाई में कहा था कि पाकिस्तान को ये सहायता भारत को संदेश देने के लिए नहीं दी गई। पाकिस्तान में आतंकवाद के खिलाफ अभियान में सहयोग के इरादे से ये मदद दी गई है। अमेरिका ने कहा था कि इससे पाकिस्तान के परमाणु हथियारों की भी सुरक्षा होगी।

जे पी नड्डा ने भ्रष्टाचार को लेकर केरल सरकार पर साधा निशाना

(आधुनिक समाचार सेवा)

कोट्टायम (केरल)। भाजपा अध्यक्ष जे पी नड्डा ने रविवार को केरल में वाम लोकतांत्रिक मोर्चा सरकार पर

हमला करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन का कार्यालय 'भ्रष्टाचार के दायरे से बाहर नहीं' है 'सोना घोटाले की गर्मी' वहां भी पहुंच गई है। कर्ज के जाल में फंस जाएगा केरल नड्डा ने एलडीएफ सरकार पर ऐसी स्थिति पैदा करने का आरोप लगाया, जहां राज्य 'कर्ज के जाल में फंस जाएगा' और कहा कि उसका कर्ज लगभग दोगुना हो गया है। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों की एक बैठक में यह भी कहा कि केरल में नशीली दवाओं का खतरा और अराजकता बढ़ रही है।उन्होंने कहा, 'मौजूदा सरकार, एलडीएफ सरकार, माकपा सरकार ऐसी स्थिति पैदा करने की कोशिश कर रही है, जहां सरकार कर्ज के जाल में फंस जाए और कर्ज लगभग दोगुना हो जाए। नड्डा ने कहा, 'अगर मैं भ्रष्टाचार की बात करूं तो सीएम कार्यालय भी भ्रष्टाचार के दायरे से बाहर नहीं है। यह भ्रष्टाचार के दायरे में है। अगर मैं सोने के घोटाले की बात करूं तो गर्मी सीएमओ तक भी पहुंच गई है। ड्रग का खतरा बढ़ रहा है और इतना ही नहीं आप देखेंगे कि वहां अराजकता भी है 'लोकतंत्र में हिस्सा के लिए कोई जगह नहीं' भाजपा के वरिष्ठ नेता ने यह भी बताया कि केरल में कई पार्टी कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी गई है या उन्हें घायल कर दिया गया है। उन्होंने कहा, 'लोकतंत्र में हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है। केवल तर्क और चर्चा के लिए जगह है। लेकिन हम देखते हैं कि शारीरिक हमले, हिंसा, वह भी राज्य प्रायोजित हिंसा चलती रहती है।'भाजपा का करें समर्थन' नड्डा ने कहा कि अगर केरल के लोग चाहते हैं कि राज्य का विकास हो, बुनियादी ढांचा हो, भ्रष्टाचार मुक्त हो और जनता सशक्त हो, तो उन्हें भाजपा की नीतियों और कार्यक्रमों का 'समर्थन' करना चाहिए। उन्होंने कहा, 'भाजपा का समर्थन करना ही एकमात्र तरीका है।

अमृतसर में किसानों का धरना निज्जरपुरा टोल प्लाजा को करवाया बंद

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। कर्नाटक में राज्यपाल को मांगपत्र देने जा रहे करीब दो हजार किसानों को गिरफ्तार करने से जिले में रोष व्याप्त हो गया है। इसके विरोध में सोमवार शाम करीब पांच बजे भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) नेता मेहताब सिंह की अगुवाई में किसानों ने निज्जरपुरा टोल प्लाजा पर धरना देते हुए टोल बंद करवा दिया। फिर उन्होंने कर्नाटक सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंचे डीएसपी कुलदीप सिंह और एसएचओ अमोलक सिंह ने ट्रैफिक निकालने के लिए साइड वाली दोनों वीआइपी लेन को खुलवा दिया और लोग वहां से बिना टोल पर्ची के ही निकले। किसान नेता मेहताब सिंह ने कहा कि कर्नाटक में किसानों की करीब दस लाख एकड़ फसल बर्बाद हो गई है, जिसके मुआवजे के लिए किसान राज्यपाल को मांगपत्र देने जा रहे थे लेकिन कर्नाटक सरकार ने भाई बलदेव सिंह सिरसा सहित करीब दो हजार किसान नेताओं और किसानों को गिरफ्तार कर लिया।

फीस वृद्धि के विरोध में एबीवीपी कार्यकर्ता ने विश्वविद्यालय के सभी रास्तों पर की तालाबंदी

एडीएम ने ताला तोड़कर खुलवाया गेट, अमिताभ ठाकुर भी समर्थन में पहुंचे

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। पिछले 10 दिनों से फीस वृद्धि को लेकर डीएसडब्ल्यू कार्यालय पर प्रदर्शन कर रहे एबीवीपी कार्यकर्ता उग्र हो गए। सुबह 08:00 बजे ही परिसर में तालाबंदी कर दी। केपीयूसी गेट लाइब्रेरी गेट छात्रसंघ भवन गेट सहित विश्वविद्यालय में प्रवेश के सभी रास्तों पर ताला जड़ दिया। साथ ही विश्वविद्यालय में छात्रों ने पढ़ाई बाधित करने की तैयारी कर ली है। परिसर में अचानक हुई इस घटना के बाद पुलिस बल की संख्या बढ़ा दी गई। एडीएम सिटी ने पहले समझाने की कोशिश की फिर करीब साढ़े दस बजे ताला तोड़कर गेट खोलवा दिया जिसके बाद छात्र-छात्राएं कक्षाओं में जा सके। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में फीस वृद्धि को लेकर चल रहे आंदोलन को समर्थन देने के लिए उत्तर प्रदेश के पूर्व आईजी और अधिकार सेना के अध्यक्ष अमिताभ ठाकुर भी पतने नूतन ठाकुर के साथ आज दिन में 11:30 बजे छात्रों के बीच पहुंचे। अमिताभ ठाकुर ने आंदोलन को समर्थन दिया और कहा कि फीस वृद्धि से गरीब बच्चे शिक्षा के अधिकार से वंचित रह जाएंगे। इस दौरान सैकड़ों की संख्या में छात्राएं भी अनशन स्थल पर पहुंची। छात्रों के साथ बैठकर छात्राओं ने भी फीस वृद्धि का विरोध किया। सोमवार सुबह सुबह एबीपी के दर्जनों कार्यकर्ता विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी गेट पर पहुंचे और उस पर ताला जड़ दिया।

ई-रिक्शा पर बैठे चार युवकों ने चालक को पीटकर किया अधमरा

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। अतरसुइया थाना क्षेत्र के पटेल नगर में एक ई-रिक्शा चालक को पीटकर अधमरा करने का मामला सामने आया है। चालक रहमान पुत्र रशीद निवासी कीडगंज को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। रहमान के चाचा ने अतरसुइया थाने में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया कि रहमान जीरो रोड बस स्टैंड पर ई-रिक्शा लेकर खड़ा था। चार युवक पटेल नगर जाने को बैठे। वहां पहुंचने के बाद कहासुनी हुई तो युवकों ने इतना पीटा कि वह बेहोश हो गया। बेहोशी की हालत में राहगीरों ने उसे अस्पताल तक पहुंचाया। रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस जांच कर रही है।

शारदीय नवरात्र शुरू पहले दिन शैलपुत्री के पूजन को देवी मंदिरों में लगी कतार

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। शारदीय नवरात्र के प्रथम दिन मां आदि शक्ति का पूजन करने के लिए श्रद्धालुओं का सोमवार भोर से ही मंदिरों में पहुंचना शुरू हो गया। घरों में भी कलश स्थापना करके पूजन किया जाने लगा। शहर के प्रमुख देवी मंदिरों में शामिल कल्याणी देवी मंदिर, ललिता देवी मंदिर, अलोपशंकरी मंदिर में भक्तों की कतार लगी रही। अन्य देवी मंदिरों में भी श्रद्धालु सुबह से जुटे। खासतौर पर महिलाओं का तांता लगा रहा। शारदीय नवरात्रि 05 अक्टूबर को विजयादशमी तक चलेगी। आज से घर-घर में मां दुर्गा विराजेंगी। मां के नौ स्वरूपों की पूजा-अर्चना होगी। जिले भर में जगह जगह मां दुर्गा के भव्य पंडाल सजाए गए हैं। इसके अलावा घरों में भी मां की प्रतिमा व कलश की स्थापना कर पूजा हुई। नौ दिनों तक चलने वाले इस उत्सव की तैयारी के लिए लोग खरीदारी में मशगूल रहे। बाजारों में नवरात्र को लेकर रौनक दिखायी दी। हर तरफ चुनरी, नारियल सहित अन्य पूजन सामग्री की बिक्री होती रही।

लखनऊ के करीब इटौंजा मे हुआ बड़ा हादसा 10 लोगो की मौत 37 घायल

(आधुनिक समाचार सेवा)

सीतापुर। के अटरिया इलाके में हुआ बड़ा हादसा उन्हीं देवी मंदिर में मुंडन संस्कार के लिए जा रहे लोगों से भरी हुई ट्राली ट्रैक्टर ट्राली अनियंत्रित होकर तालाब में पलटी यह हादसा इटौंजा से कुमहरावा रोड पर गद्दिनपुरवा के पास हुआ सभी लोग अटरिया इलाके के तिकोई गावं के है, बाताया जा रहा है की तक़रीबन 46 लोग मौजूद थे हादसे मे 10 लोगों के मरने की सूचना मिली एवं 2 लापता है बाकी सभी घायल है घायलो को इटौंजा सी यस यस मे भर्ती कराया गया जहा उनका इलाज जारी है मौके पर आई जी लक्ष्मी सिंह ,डी एस लखनऊ सहित तमाम अधिकारी मौके पर सीएम योगी आदित्यनाथ ने भी हादसे पर दुख प्रकट किया है।

चोरी-छिनैती करने वाले तीन अपराधी गिरफ्तार,छह महीने से पुलिस की नाक में कर रखा था दम

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। छह महीने से लगातार चोरी-छिनैती करने वाले इन तीन युवकों ने पुलिस की नाक में दम कर दिया था। खुल्दाबाद थाने की पुलिस ने वाहन चोरी और मोबाइल छीनने वाले इस गैंग का राजफाश किया तो पता चला कि वे कौशांबी के सराय अकिल से शहर आकर घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाला गया तो पुलिस के हाथ कुछ सुराग लगे। एसएसआइ रामकिशोर सिंह, एसआइ अमित सिंह, अजय कुमार व मुकेश कुमार आदि बदमाशों की तलाश में लगे रहे और शनिवार देर रात जोगीवीर तिराहे के पास से तीन को पकड़

छिनैती और चोरी की घटनाएं अंजाम दे रहे थे। पुलिस ने तीन बदमाशों को गिरफ्तार कर 11 बाइक, 41 मोबाइल, तमंचा-कारतूस, 4200 रुपये बरामद किया। पूछताछ में पता चला कि छह माह से वह घटनाओं को अंजाम दे रहे थे। रेलवे स्टेशन के पास से 19 सितंबर को एक बाइक चोरी हो गई थी। खुल्दाबाद पुलिस मामले की जांच में जुटी थी। लिया। इनसे पूछताछ के बाद 11 बाइक, 41 मोबाइल बरामद हुए। एसपी सिटी संतोष कुमार मीना ने इस गैंग का राजफाश करते हुए बताया कि गिरफ्तार बदमाशों में कौशांबी में सराय अकिल के इछना गांव का कुलदीप त्रिपाठी और ऋषि गौतम तथा फकीराबाद का नीरज यादव शामिल हैं। इनका एक साथी राज भाग निकलने में सफल रहा।

सुबह पांच बजे से चलीं विंध्याचल के लिए स्पेशल बसें

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। नवरात्र की शुरुआत के साथ सोमवार सुबह पांच बजे से विंध्याचल जाने के लिए रोडवेज

की बसें संचालित होने लगीं। जीरो रोड बस स्टैंड से सुबह पांच बजे पहली बस की शुरुआत हुई। इसके बाद हर 30 मिनट बाद बसें रवाना हुई। दोपहर तक काफी संख्या में श्रद्धालु बसों से विंध्याचल रवाना हुए। यह अतिरिक्त बसें चार अक्टूबर तक चलेंगी। यूपी रोडवेज प्रयागराज रीजन ने 195 बसों का इंतजाम किया है। इसमें से 130 बसें प्रयागराज रीजन से संचालित होने लगी हैं। जीरो रोड बस स्टैंड पर 50 बसों को लगाया गया है।

इस नवरात्रि मूर्तियों की बढ़ती लागत और घटती मांग से बेहाल बंगाली मूर्तिकार

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। इस साल, प्रयागराज के प्रमुख मूर्ति निर्माण केंद्र के कारीगर मूर्तियों की बढ़ती लागत

और घटती मांग के कारण परेशान हैं। हालात यहां तक पहुंच गए हैं की पहले जहां शहर के क्षदुर्गाञ्पूजा आयोजक बड़े आकार की 100 मूतिन्यों हाथों हाथ ले जाते थे वहीं अब 35 को भी बेचने के लाले पड़ रहे हैं। कोरोना महामारी के कारण दो साल के अंतराल के बाद,आजकल कर्नलगंज इंटर कॉलेज के बंगाली कारीगरों को फिर से बांस, मिट्टी, रस्सियों, घास, लकड़ियों और अन्य वस्तुओं से देवी दुर्गा और अन्य की मूतिन्याँ बनाते देखा जा सकता है। इस व्यस्तता के बावजूद, वे निराश हैं क्योंकि उन्हें मूर्तियों का सही मूल्य नहीं मिल रहा है, कारण कच्चा माल महंगा हो गया है और श्रमिकों की मजदूरी में वृद्धि हुई है। पिछले दो वर्षों की तुलना में यह काफी बेहतर स्थिति है लेकिन कच्चे माल की बढ़ती कीमतों ने बजट को बिगाड़ दिया है कोरोना से पहले हम 100 मूतिन्याँ बनाते थे और सभी बिक जाते थे लेकिन अब 35 को बेचना मुश्किल है जो हमने तैयार किया है,ङ्ग अम्बा प्रतिमालय के कारीगर ने क्षप्रयागराजञ्टाइम्स से बात करते हुए कहा। कारीगरों के मुताबिक, पंडालों के लिए दुर्गा मूतिन्यों की मांग में कमी आई है। इसके अलावा, पूजा आयोजकों ने मॉडेलर्स से मूतिन्यों की कीमतें यथासंभव कम रखने का अनुरोध किया है। आयोजक दावा कर रहे हैं कि उनके पास बजट कम है। इसका प्रबंध करने का एक ही उपाय है की मूतिन्यों के साइज को छोटा कर दो। वह कहते हैं उनके पास बजट नहीं है। , वह बोले। अब घास, रस्सी, लकड़ी और कुे मिट्टी के दाम कई गुना बढ़ गए हैं। जिसके कारण देवी दुर्गा, भगवान गणेश, कार्तिकेय, 'महिषासुर' आदि की कीमत 75 हजार से 1.15 लाख के आसपास है और यह शहर के पंडाल मालिकों के लिए बहुत महंगा है।

प्रवेश सूचना

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

(आई0 एस0 ओ0 प्रमाणित औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र)

भारत सरकार की कौशल विकास योजना मे समस्त, 2022 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते है। ट्रेड प्रवेश योग्यता तथ प्रस्तुत विविण पाठ्यक्रमों की अवधि के विवरण नीचे दिए गए है।

क्र0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा (कम्प्यूटर ऑपरेटर)	1 वर्ष	12वी पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वी पास
3.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वी पास
4.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वी पास
5.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वी पास
6.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वी पास
7.	सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वी पास
8.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वी पास
09.	रेफ्रिजिरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वी पास
10.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वी पास
11.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वी पास
12.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वी पास

प्रस्तुत विभिन्न पाठ्क्रमों में रिक्त की उपलब्धता तथा दाखिला शुल्क का विवरण संस्थान की वेबसाइट पर देखे।

1. **प्रमाण पत्र:** सफल**प्रशिक्षणार्थियों** को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय ट्रेड प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो सेवा में भर्ती के लिए मान्य योग्यता है।
2. **चयन की प्रक्रिया:** इस वर्ष कोविड–19 महामारी के चलते **सभी** सीटों पर दाखिले पहले आओ पहले पाओं के आधार पर किये जायेगे।
3. **आयु:** उम्मीदवार की आयु 1 अगस्त, 2022 को न्यूनतम 14 वर्ष या उससे अधिक होनी चाहिए।
4. **आवेदन कैसे करे:** ओवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है।
   नोट: आवेदन फार्म भरते हुए रू 2665 का पंजीकरण शुल्क भी (अप्रतिदेय) होगा।
5. **बस पास:** सरकार द्वारा **विद्यार्थियों** के लिए प्रति माह में रियायती एसी बस पास सुविधा उपलब्ध है, जो कि सभी बसों में मान्य है।
6. **छात्रवृत्ति:** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिसके पास आय प्रमाण पत्र हो, वो भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है।
7. अधिक जानकारी तथा ऑनलाइन आवेदन के लिए संस्थान की वेबसाइट www,nainiiti.com देखें।
8. दाखिले की अंतिम तिथि: 30 सितंबर 2022
9. सफल अभ्यार्थियों को भारत सरकार द्वारा रू 7700 प्रति माह की अप्रेंटिसशिप सुविधा उपलबध है।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

सम्पर्क सूत्र:– 7518828710, , 9415608710, 6386474074, 9415608790

जीजीआईसी में छात्राओं को किया गया जागरूक

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। खाद्य सचल प्रयोगशाला के माध्यम से राजकीय बालिका इण्टर कालेज में छात्राओं को खाद्य पदार्थो में मिलावट की जानकारी हेतु छात्राओं को जागरूक किया गया। मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी प्रदीप कुमार राय ने छात्राओं को मिलावट के बारे घरेलू तरीके से कैसे पता करें इसकी जानकारी दी। उन्होने बताया कि मिठाई पर जो चांदी का वर्क चढ़ा रहता है वह असली है या नकली इसको हम आसानी से पता कर सके है चांदी के वर्क को हथेली पर लेकर रगड़े यदि वह गायब हो जाता है तो असली है यदि वह गोला बन जाता है तो नकली है, नकली चांदी का वर्क स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है इस अवसर पर जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार ने स्वतः हथेली पर रगड़ कर परीक्षण किया। इस मौके पर प्रमुख रूप से खाद्य सुरक्षा अधिकारी संजय कुमार तिवारी, सह विद्यालय निरीक्षक एसपी द्विवेदी, डाक्टर अनीश, विन्ध्याचल सिंह, बालेन्दु शेखर, धर्मेन्द्र ओझा, अंजनी कुमार मिश्र, विवेक तिवारी आदि मौजूद रहे।

वाराणसी में चार साल में बढ़ी 10 गुना पर्यटकों की संख्या

(आधुनिक समाचार सेवा)

वाराणसी। वाराणसी में पर्यटन के क्षेत्र में जिस तरीके से महज चार साल में दस गुना से अधिक की बढ़ोत्तरी की है वह इस बात का द्योतक है कि आने वाले समय में पर्यटन का भविष्य बेहद सुनहरा है। कोरोना काल के पहले जहां पर्यटन की गति इतनी नहीं थी वहीं इसके बाद पर्यटकों का काशी के प्रति रुझान इस कर बढ़ जाएगा, शायद किसी को भरोसा न था। खासकर श्री काशी विश्वनाथ धाम के लोकार्पण के बाद तो इसमें गजब का उछाल आया। इसके इतर लगातार पर्यटन के क्षेत्र में विकास से काशी में बड़ा बदलाव आया है। वाराणसी में बढ़े पर्यटकों की संख्या से आसपास के जिले खासकर मीरजापुर और इलाहाबाद को भी लाभ मिल रहा है। ऐसा बेहतर कनेक्टिविटी की वजह से भी हो सका है। इस बार सावन में श्रद्धालुओं के आने के सारे रिकार्ड टूट गए तो आम दिनों में भी स्थिति उत्साहजनक है। अमूमन बाहर से आने वाले श्रद्धालु काशी में विश्वनाथ, काल भैरव, संकट मोचन मंदिर सहित अन्य स्थानों के साथ मीरजापुर मां विध्यवासिनी के दरबार जाते है। कोई ऐसा पर्व-त्योहार या महत्वपूर्ण तिथि नहीं होती जब पर्यटकों से काशी न भर जाती हो, होटल न फुल हो जाते हों। आगरा जैसे शहर से आज काशी पर्यटन के क्षेत्र में आगे है तो यह यूं ही नहीं है।

सात दिनों के पूजा-अर्चना के बाद योगी आदित्यनाथ के लिए बनाए गए मंदिर में अब ताला लग चुका है

(आधुनिक समाचार सेवा)

मंदिर के अंदर लगी योगी मूर्ति भी गायब है। हालांकि मूर्ति किसने और कैसे गायब की है, इसको लेकर न तो ग्रामीण कुछ बता पा रहे हैं और न ही प्रशासन। जिस शख्स ने मंदिर का निर्माण कराया था, वह भी लापता बताया जा रहा है। योगी के मंदिर में ताला लगने और मूर्ति गायब होने की चर्चा जोरों पर है। बतादें कि योगी के मंदिर को लेकर विवाद बढ़ने के बाद मंदिर की जमीन की रविवार को प्रारंभिक पैमाइश कराई गई थी, जिसमें जमीन कृषि विश्वविद्यालय कुमारगंज की निकली। मुख्यमंत्री पोर्टल पर की गई शिकायत के बाद एसडीएम के आदेश पर रविवार को इस जगह की पैमाइश कराई गई। बारिश के कारण बाधित हुआ पैमाइश का काम सोमवार को पूरा किया जाएगा। इसके बाद ही स्थिति स्पष्ट होगी। कल्याण भदरसा गांव के मजरा मौर्या का पुरवा निवासी यूट्यूबर प्रभाकर मौर्य ने अपने घर के पास मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मंदिर बनवाया था। इस बीच उनके चाचा रामनाथ मौर्य ने मंदिर स्थल को विवादित बताते हुए उप जिलाधिकारी सोहावल को प्रार्थना पत्र देकर मुख्यमंत्री पोर्टल पर इसकी शिकायत की। शिकायत होने के बाद एसडीएम सोहावल मनोज कुमार श्रीवास्तव ने रविवार को राजस्व और पुलिस टीम मौके पर पैमाइश के लिए भेजी। सूचना के बावजूद प्रभाकर मौर्य वहां नहीं पहुंचे।राजस्व विभाग के सूत्रों की मानें तो प्रारंभिक जांच में मंदिर निर्माण की जगह आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज के अंतर्गत संचालित फसल अनुसंधान केंद्र मसौधा की निकली। पुलिस व राजस्व टीम की पैमाइश में रुक-रुक कर हो रही बरसात ने बाधा डाल दी। इस कारण अब पैमाइश सोमवार को होने की संभावना है। सूत्रों की मानें तो प्रभाकर के पिता जगननथ मौर्य और एक भाई से पुलिस ने पूछताछ भी की है लेकिन पुलिस इससे भी इनकार कर रही है। पूराकलंदर थाना के प्रभारी निरीक्षक राजेश सिंह ने बताया कि पैमाइश की सूचना प्रभाकर मौर्य को दी गई थी लेकिन वह लापता हो गए। मंदिर में मूर्ति भी नहीं मिली। उप जिलाधिकारी सोहावल ने बताया कि सोमवार को फिर पैमाइश के बाद ही स्पष्ट होगा कि जहां मंदिर बना है वह किस प्रकार की जमीन है।मंदिर गिराने की हो रही साजिश प्रभाकर मौर्य यूट्यूबर व मंदिर निर्माणकर्ता प्रभाकर मौर्य ने फोन पर रोते हुए कहा कि हमने आराध्य मानकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मूर्ति स्थापित की और अब मंदिर से मूर्ति हटाकर इसे गिराने की साजिश रची जा रही है। वह मुख्यमंत्री से मिलकर पूरी घटना बताएंगे। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने दो बार किया था ट्वीट कल्याण भदरसा में योगी के मंदिर की सूचना जब फेसबुक पर प्रसारित हुई तो समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने ट्वीट कर तंज कसा था कि योगी आदित्यनाथ का मंदिर बना। इसके बाद जब प्रभाकर मौर्य के चाचा रामनाथ मौर्य ने शिकायत की तो अखिलेश ने फिर ट्वीट कर कहा कि विवादित जमीन पर बने इस मंदिर पर बुलडोजर कौन चलाएगा।

वाराणसी में इस बार देव दीपावली पर 10 लाख दीपों से जगमग होंगे गंगा घाट

(आधुनिक समाचार सेवा)

वाराणसी। पंचगंगा घाट पर चंद दीपों की टिमटिमाहट के साथ शुरू हुई काशी की देव दीपावली इस बार 10 लाख दीपों की आभा से जगमग होगी। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम का नव्य-भव्य परिसर सामने आने के बाद पहली बार 10 लाख की भीड़ की उम्मीद के साथ अब तक के सारे रिकार्ड टूटने की संभावना है। गंगा के किनारे के सभी होटल फुल हो चुके हैं। आसमान के सितारों के जमीन पर उतर आने का आभास देने वाली काशी की देव दीपावली को देखने के लिए दुनियाभर से बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। इस बार इसे और भव्यता देने को तैयारी है गंगा पार रेती में जलाए जाएंगे दो लाख दीपवाराणसी व मीरजापुर मंडल की पर्यटन उप निदेशक प्रीति श्रीवास्तव ने बताया कि देवोत्थान एकादशी के चार दिन बाद मनाई जाने वाली देव दीपावली पर इस बार वाराणसी के अर्धचंद्राकार घाटों पट 10 लाख दीप जलाने की योजना है। इसमें आठ लाख दीपक अर्धचंद्राकार घाटों पर जलेंगे और दो लाख दीप घाट के उस पार जलाए जाएंगे। इसके अलावा श्रीकाशी विश्वनाथ धाम द्वार से लेजर शो के प्रोजेक्शन की तैयारी है।कार्तिक पूर्णिमा के दिन देव दीपावली भी मनायी जाएगा। पूर्णिमा पर पवित्र नदी में सनन करने का विशेष महत्व है। पौराणिक मान्यता के अनुसार कार्तिक पूर्णिमा के दिन स्वर्ग से देवता पृथ्वी पर आकर गंगा सनन करते हैं इसलिए इस दिन गंगा सनन अवश्य करना चाहिए। अगर गंगा सनन संभव न हो तो कुआं, तालाब अथवा गंगाजल मे जल डालकर सनन करना चाहिए। इससे भी गंगा सनन करने का फल प्राप्त होता है।कार्तिक पूर्णिमा को इसे त्रिपुरारी पूर्णिमा भी कहा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन देवलोक से सभी देवी-देवता गण पवित्र नगरी वाराणसी यानि महाकाल की नगरी काशी में पधारते हैं। इसलिए कार्तिक मास की पूर्णिमा तिथि को काशी में बहुत साज-सज्जा की जाती है।

गोरखनाथ मंदिर में विशेष शक्ति उपासना

(आधुनिक समाचार सेवा)

गोरखपुर। शारदीय नवरात्र की प्रतिपदा को शिवावतारी एवं नाथपंथ के प्रणेता गुरु गोरक्षनाथ की साधनास्थली गोरक्षपीठ में लोक कल्याण की मंगलकामना के साथ आदिशक्ति की विशेष उपासना पीठ की परंपरा के अनुसार वैदिक विधि विधान से प्रारंभ हुई। गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मठ के पहले तल पर स्थित शक्तिपीठ में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच कलश स्थापना कर प्रथम दिन मां शैलपुत्री की विधि विधान से पूजा अर्चना की।

त्योहारों के अवसर पर शांति व्यवस्था बनाये रखने को तत्पर रहें-जिलाधिकारी

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने जनपद में शारदीय-नवरात्रि (दुर्गापूजा), विजयदशमी/दशहरा एवं भरत-मिलाप, बारावफात आगामी त्योहारों के अवसर पर शांति व्यवस्था, साम्प्रदायिक सद्भाव एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण सुनिश्चित कराये जाने हेतु समस्त उपजिलाधिकारियों, क्षेत्राधिकारियों, थाना प्रभारियों एवं सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि सतत एवं अथक परिश्रम के साथ अपने- अपने क्षेत्रान्तर्गत दुर्गापूजा, दशहरा एवं भरत मिलाप व बारावाफात त्योहार को प्रत्येक दशा में सकुशल, सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में सम्पनन करायें इसमें किसी भी स्तर पर किसी भी प्रकार की शिथिलता एवं लापरवाही न होने पाये।उन्होंने निर्देशित किया कि मूर्ति विसर्जन एवं दशहरा के अवसर पर शोभा यात्रा तथा दशहरा एवं भरत मिलाप के मेले के अवसर पर कितनी-कितनी भीड़ व जनमानस एकत्रित रहेगें व उनके रूट तथा कौन-कौन स्थल संवेदनशील है उसका पूर्व से ही आंकलन कर लिया जाये। सोशल मीडिया की राउण्ड द क्लॉक मानीटरिंग की जाय एवं कोई भी आपत्तिजनक पोस्ट संज्ञान में आते ही तत्काल ब्लाक करते हुये प्रभावी कार्यवाही की जाये। जन सुविधायें यथा-प्रकाश व्यवस्था, पेयजल व साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाये। मूर्ति विसर्जन मागी व दुर्गा प्रतिमा पण्डालों एवं अन्य चहल-पहल व व्यस्त स्थलों तथा मेला लगने वाले स्थानों एवं उसके आस-पास ढीले-ढाले, असुरक्षित व जर्जर विद्युत तारों जिनसे जनसुरक्षा को खतरा एवं दुर्घटना की शक्यता हो को तत्काल सुव्यस्थित करायें। सार्वजनिक स्थानों पर किसी दशा में किसी प्रकार के शस्त्रों का प्रदर्शन न हो एवं प्रतिबन्धित शस्त्र लेकर चलने वालों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्यवाही की जाये। कस्बो तथा मुहल्लो में पूर्व से गठित शांति समितियों की बैठक आयोजित कर सम्भ्रान्त नागरिकों, शान्ति समितियों के सदस्यों का सक्रिय सहयोग प्राप्त कर लिया जाय। एसडीएम/क्षेत्राधिकारी थानों में पीस कमेठी की बैठक करें और थानों की फोर्स की ब्रीफिंग की जये तथा संवेदनशील क्षेत्रों व अन्य स्थानों पर मोबाइल पेट्रोलिंग करायी जाये जिससे कोई अप्रिय घटना न घटित होने पाय। इसके हर स्तर पर सजगता व सतर्कता बनायी रखी जाये। यातायात में किसी प्रकार का अवरोध न हो इसके लिये डाइवर्जन की भी व्यवस्था पूर्व से ही सुनिश्चित कर ली जाय।

बच्चा चोरी के शक में स्कार्पियों सवार दंपति व चालक को पीटा

(आधुनिक समाचार सेवा)

गोरखपुर। जिले के डोमिनगढ़ पुल पर सोमवार की रात बच्चा चोरी करने का आरोप लगा ग्रामीणों ने स्कापिय्यो सवार दंपति व चालक को पीट दिया। भागने की कोशिश करने पर गाड़ी में तोड़फोड़ शुरू कर दी। तिवारीपुर थाना पुलिस ने भीड़ को हटाकर मऊ जिले के रहने वाले दंपत्ति व चालक को बचाया। रात में नौ बजे मऊ जिले के मोहम्मदाबाद थानाक्षेत्र स्थित गोहना गांव निवासी शेखर तिवारी अपनी पतने साधना व चालक रेयाज के साथ शहर से होते हुए डोमिनगढ़ पुल की तरफ गए। वहां गाड़ी खड़ी कर राप्ती की बाढ़ का पानी देख रहे थे। स्थानीय लोगों ने बच्चा चोर समझ कर तीनों को घेर लिया। स्कापिय्यो का शीशा तोड़ने के साथ ही गाड़ी पंचर कर दिया। विरोध करने पर दंपत्ति के साथ ही चालक को पीट दिया। गांव के लोगों का कहना था कि महिला-पुरुष स्कापिय्यो से एक बच्चे को लेकर आए थे जिसे पुल पर दूसरी कार में शिफ्ट कर दिया। तिवारीपुर थाना पुलिस ने भीड़ से किसी तरह से महिला-पुरुष को बाहर निकाला और थाने पर ले जाकर पूछताछ की।

गोरखपुर में चिह्नित कर ध्वस्त किए जाएंगे जर्जर भवन

(आधुनिक समाचार सेवा)

गोरखपुर। गोरखपुर जिले में जर्जर भवनों को चिह्नित कर ध्वस्त किया जाएगा। जिलाधिकारी कृष्णा करुणेश ने इस संबंध में आदेश जारी कर दिया है। जर्जर भवनों को चिह्नित करने की जिम्मेदारी एसएसपी, नगर आयुक्त एवं जीडीए उपाध्यक्ष सहित नौ अधिकारियों को दी गई है। जिलाधिकारी ने बताया कि भारी बारिश के कारण गोरखपुर सहित प्रदेश के कुछ जिलों में जर्जर मकान पूरी तरह से जर्जर हो चुके है या निष्प्रयोज्य हो चुके हैं, उन्हें चिह्नित कर ध्वस्त किया जाए। नियमित रूप से इसकी रिपोर्ट जिलाधिकारी कार्यालय को देनी होगी। पीडब्लूडी के अधिशासी अभियंता प्रांतीय खंड को इस कार्य के लिए जिलाधिकारी ने नोडल अधिकारी बनाया है। जिलाधिकारी ने एसएसपी गौरव ग्रोवर, नगर निगम के नगर आयुक्त अविनाश सिंह, जीडीए उपाध्यक्ष महेंद्र सिंह तंवर, मुख्य विकास अधिकारी संजय कुमार मीणा, मुख्य चिकित्साधिकारी डा. आशुतोष कुमार दुबे, जिला विद्यालय निरीक्षक ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह भदौरिया, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी रामेंद्र प्रताप सिंह, पीडब्लूडी के अधिशासी अभियंता प्रांतीय खंड एवं ग्रामीण अभियंत्रण विभाग के अधिशासी अभियंता को जर्जर भवनों को चिह्नित करने की जिम्मेदारी दी गई है। जगननथपुर में शनिवार की सुबह जर्जर भवन गिर जाने से एक युवक की मृत्यु हो गई और परिवार के अन्य सदस्य घायल हो गए। इस घटना के बाद सतर्कता बरतते हुए जिला प्रशासन ने जर्जर भवनों को चिह्नित कर ध्वस्त करने का निर्देश दिया है।

या दीवार गिरने से नौ लोगों की मौत हो चुकी है। उन्होंने कहा कि बारिश जारी है। ऐसे में आशंका है कि जिले में जर्जर भवन इसके चलते गिर सकते हैं। भवन गिरने से व्यापक जन-धन की हानि हो सकती है। आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 का हवाला देते हुए जिलाधिकारी ने जल्द से जल्द जर्जर भवनों को चिह्नित कर उसे ध्वस्त करने का आदेश दिया है। जिलाधिकारी ने कहा कि जो भवन

प्रमुख सचिव ने जनपद स्तरीय अधिकारियों के साथ की बैठक

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। प्रमुख सचिव ग्राम्य विकास विभाग हिमांशु कुमार ने विकास भवन के सभागार में तीन सदस्यीय मंत्रीमण्डल समूह के जनपदीय भ्रमण के समय विकास कार्यक्रम एवं कानून व्यवस्था की समीक्षा के दौरान दिये गये निर्देशों के अनुपालन की स्थिति की समीक्षा हेतु जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल, मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया सहित जनपद स्तरीय अधिकारियों के साथ बैठक की। प्रमुख सचिव ने गोशाला के रख-रखाव, पीएचसी/सीएचसी पर डाक्टर एवं पैरामेडिकल स्टाफ की उपस्थिति, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं ग्रामीण, नगर पालिका/नगर पंचायतों में स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति एवं डोर-टू-डोर कूड़ा कलेक्शन, जल जीवन मिशन, गड्ढामुक्ति, शौचालय, सामुदायिक शौचालय का निर्माण एवं कानून व्यवस्था पर दिये गये निर्देश के अनुपालन एवं मंत्री मण्डलीय समूह को प्राप्त जन शिकायतों के निस्तारण एवं अनुपालन की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिया कि शिकायतों के निस्तारण के सम्बन्ध में स्पष्ट आंकड़ा उपलब्ध कराया जाये, कितनी शिकायतें प्राप्त हुई, उन पर क्या कार्यवाही हुई और कितनी शिकायतें निस्तारण हेतु अवशेष है। भगवान बुद्धेश्वर मन्दिर बिहार जो लगभग 2 किमी0 तक विस्तृत क्षेत्र में फैला है इस पर सिंह द्वार बनाने एवं बुद्ध सर्किट से जोड़ने की मांग के सम्बन्ध में उन्होने निर्देश दिया कि इस विषय पर पर्यटन अधिकारी की आख्या प्राप्त कर अनुपालन भेजवाया जाये। श्रमायुक्त द्वारा अवगत कराया गया था कि 1386 श्रमिकों द्वारा विभिनन योजनाओं के अन्तर्गत आवेदन किया गया था किन्तु उनके द्वारा इसका विस्तृत विवरण नही दिया गया था जिस पर नाराजगी जताते हुये उन्होने कहा कि प्राप्त आवेदन एवं लाभान्वित किये गये श्रमिकों की संख्या एवं अवशेष लाभाथिय्यों की सूची भी प्रेषित की जाये। विद्यालयों के विद्युतीकरण के सम्बन्ध में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि 40 मीटर से अधिक दूरी पर स्थित ट्रान्सफार्मर वाले विद्यालयों में विद्युतीकरण कराने हेतु झटपट पोर्टल पर आवेदन किया गया है। प्रमुख सचिव ने निर्देश दिया कि झटपट पोर्टल आम जनता के लिये है, अतः विद्युत विभाग को प्रस्ताव बनाकर उपलब्ध कराया जाये। इसी तरह आवास के लाभाथिय्यों को 90 दिन की मजदूरी दिये जाने के सम्बन्ध में स्पष्ट आंकड़ा उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया। अधीक्षण अभियन्ता विद्युत से समय पर ट्रान्सफार्मर न बदलने एवं शासन के निर्देशों का अनुपालन न करने वाले अवर अभियन्ता के विरूद्ध की गयी कार्यवाही सूचना उपलब्ध कराने का निर्देश दिया।उन्होंने निर्माण कायी की समीक्षा करते हुये निर्देश दिया कि सम्बन्धित जिला स्तरीय अधिकारी निर्माणाधीन परियोजनाओं की नियमित समीक्षा करें तथा तय समय सीमा के अन्तर्गत उसे पूर्ण करायें। कार्यदायी संस्थाओं को भी उन्होने निर्देशित किया कि प्रत्येक दशा में डीपीआर में दी गयी समय सीमा के अन्तर्गत गुणवत्तापूर्ण कार्य पूर्ण किया जाये। प्रमुख सचिव ने कहा कि अपूर्ण परियोजनाओं की नियमित समीक्षा की जाये। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा, अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी विद्यासागर मिश्र, मुख्य चिकित्साधिकारी जीएम शुक्ला, जिला विकास अधिकारी ओम प्रकाश मिश्र, परियोजना निदेशक डीआरडीए आर0सी0 शर्मा, उप निदेशक कृषि डा0 रघुराज सिंह, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार सहित जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

मुजेहरा खुर्द में आयोजित कुश्ती दंगल में मुख्य अतिथि के रूप में नपाध्यक्ष मनोज जायसवाल ने की शिरकत

फीता काटकर कुश्तीदंगल का किया शुभारंभ

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्ज़ापुर। नपाध्यक्ष मनोज जायसवाल रविवार की दोपहर कोन ब्लॉक के मुजेहरा खुर्द ग्राम पहुँचे।जहा मुख्यातिथि के रूप मे पहुँचे नपाध्यक्ष ने फीता काटकर कुश्ती दंगल का शुभारंभ किया।बता दे पिछले कई सालों से मुजेहरा खुर्द ग्राम के मैदान में कुश्ती का आयोजन किया जाता रहा है।इस दंगल में आस-पास गांवो के साथ महाराजगंज,कछवा,मीरजापुर वाराणसी,भदोही,प्रयागराज से दंगल में पहलवानों ने प्रतिभाग किया।इस मौके नपाध्यक्ष ने वहां उपस्थित दर्शकों और कुश्ती के पहलवानों को सम्बोधित करते हुये कहा कि कुश्ती मिर्ज़ापुर का पारंपरिक खेल है और मिर्ज़ापुर में कई स्थानों पर दंगल का आयोजन किया जाता है।कुश्ती से शरीरिक और मानसिक विकस होता है।भारत के पहलवानों ने ओलंपिक गेम और अन्य विश्वस्तरीय प्रतियोगितायो में कुश्ती में बेहतरीन प्रदर्शन किया है।इन पहलवानों ने देश को कई मेडल दिलवाकर देश का नाम वैश्विक पटल पर ऊंचा किया है।हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी खिलाड़ियों को बढ़ावा देने के लिए कई बड़े कदम उठाये है।मिर्जापुर में भी प्रतिभाओं की कमी नही है मुझे पूर्ण विश्वास है आने वाले समय मे हमारे जनपद के प्रतिभाशाली खिलाड़ी निश्चित ही जिले का नाम रोशन करेंगे।इस मौके पर कमेटी अध्यक्ष विजेंद्र सिंह,लवकुश दुबे ,रुद्रेश सिंह,विजय सिंह मास्टर अशोक सिंह,महादेव यादव,अनिल दुबे,विक्रम सिंह,मनोज हरिजन,पिण्डल पहलवान,पप्पू सिंह आदि लोग उपस्थित रहे ।

जाती जनगणना की मांग को लेकर जन अधिकार पार्टी ने सौप ज्ञापन

(आधुनिक समाचार सेवा)

सोनभद्र। दिनांक 26 सितम्बर 2022 दिन सोमवार को जन अधिकार पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा0 बाबू सिंह कुशवाहा जी के निर्देशानुसार प्रदेश ब्यापि कार्यक्रम के तहत जन अधिकार पार्टी के निवर्तमान मण्डल अध्यक्ष भागीरथी सिंह मौर्य की अगुआई में जन अधिकार पार्टी का एक प्रतिनिधि मंडल सदर तहसील रावट्र्सगंज पहुँच उप जिलाधिकारी की नामौजूदगी में प्रशासनिक अधिकारी को महामहिम राष्ट्रपति महोदय के नाम सम्बोधित ज्ञापन सौपा । इस दौरान भागीरथी सिंह मौर्य ने कहा कि जन अधिकार पार्टी मांग करती है कि देश मे जाती जनगणना कराया जाए क्योकि देश मे लोकतंत्र कायम है प्रधान से लेकर प्रधानमंत्री का चुनाव जनता के द्वारा किया जाता है जिसमे जिसका ज्यादा ओट होता है ओ ज्यादा ओट देने का काम करता है तो सरकार बनाने में उसकी ज्यादा भूमिका भी होती है इसलिए जाती जनगणना कराकर जिसकी जितनी संख्या है उसको जीवन के प्रत्येक क्षेत्रो में संख्या के अनुपात में हिस्सेदारी दिया जाए जो देश हित मे होगा और जब देश का हर वर्ग तरक्की करेगा तभी देश तरक्की करेगा । इसके साथ ही देश मे निजीकरण को बंद किए जाने , डीजल पेट्रोल पर अधिरोपित टेक्स कम किए जाने , ओबीसी छात्रों को छत्राबृत्ति दिए जाने , नई शिक्षा नीति समाप्त कर देश मे एक समान शिक्षा नीति लागू किए जाने , किसानों को खाद बीज सस्ते दामो पर दिए जाने व सिचाई के लिए किसानों को मुफ्त बिजली दिए जाने बेरोजगार युवकों को रोजगार का संशाधन उपलब्ध कराए जाने की भी मांग की गई । प्रतिनिधि मंडल में जिला महासचिव रविरंजन शाक्य , गिरजा प्रसाद , मोतीलाल ,मनोज कुमार , प्रशांत कुमार भी मौजूद रहे ।

धोखाधड़ी करने वाले तीन अभियुक्तों कि गिरफ्तारी के साथ साथ 14,700रूपये साथी घटना मे उपयुक्त बाइक भी बरामद हुई

(आधुनिक समाचार सेवा)

सोनभद्र। धोखाधड़ी करने वाले रामविलास मौर्या पुत्र स्व0 बब्बनप निवासी ग्राम नागनार हरैया, थाना राबट्र्सगंज, जनपद सोनभद्र द्वारा दिये गये प्रार्थना पत्र के आधार पर थाना रॉबट्र्सगंज पर मु0अ0सं0-702/2022 धारा 420, 379 भादवि का अभियोग पंजीकृत किया गया था। उपरोक्त घटना मे संलिप्त वांछित अभियुक्तगण की शीघ्र गिरफ्तारी हेतु डॉ0 यशवीर सिंह,पुलिस अधीक्षक जनपद सोनभद्र द्वारा अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) तथा क्षेत्राधिकारी नगर को विशेष निर्देश दिये गये। उक्त निर्देश थाना रॉबट्र्सगंज पुलिस द्वारा वांछित अभियुक्तगण क्रमशः 01.राहुल गौतम उर्फ मुलायम पुत्र हुबलाल गौतम, निवासी कौआपुर, थाना सुरियांवा, जनपद भदोही 02. रवि कुमार गौतम पुत्र सेवालाल गौतम निवासी ग्राम कटैवना, थाना ज्ञानपुर, जनपद भदोही 03. सुनील कुमार गौतम पुत्र लालचन्द गौतम निवासी ग्राम देवनाथपुर कटैवना, थाना ज्ञानपुर, जनपद भदोही को मधुपुर नौगढ़ जाने वाली रोड पर फ्लाई ओवर ब्रिज के नीचे से गिरफ्तार कर किया गया । गिरफ्तार शूदा अभियुक्तगण के कब्जे से वादी के 20,000 रुपये के किये गये धोखाधड़ी के शेष 14,700 रुपये व धटना में प्रयुक्त 01 अदद मोटर साइकिल अपाची ळझ् 66 ँ3 6310 बरामद किया । उपरोक्त गिरफ्तारी/ बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर पंजीकृत अभियोग अन्तर्गत धारा 411 भादवि की बढ़ोत्तरी कर अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है । **गिरफ्तार अभियुक्त का विवरणः-** 1. राहुल गौतम उर्फ मुलायम पुत्र हुबलाल गौतम निवासी ग्राम कौआपुर थाना सुरियांवा जनपद भदोही,उम्र करीब 29 वर्ष । 2. रवि कुमार गौतम पुत्र सेवालाल गौतम निवासी ग्राम कटैवना थाना ज्ञानपुर जनपद भदोही उम्र लगभग 24 वर्ष । 3. सुनील कुमार गौतम पुत्र लालचन्द गौतम निवासी ग्राम देवनाथपुर कटैवना थाना ज्ञानपुर जनपद भदोही उम्र लगभग 24 वर्ष । **बरामदगी का विवरण-** 01. अभियुक्तगण के कब्जे से 14,700 रुपये बरामद । 02. धटना में प्रयुक्त मोटरसाइकिल संख्या-ळझ् 66 ँ3 6310 । **गिरफ्तार करने वाले पुलिस टीमः-** 1. उ0नि0 श्री राजेश प्रताप सिंह, चौकी प्रभारी सुकृत, थाना राबट्र्सगंज, जनपद सोनभद्र । 2. आरक्षी राहुल गौड़, चौकी सुकृत, थाना राबट्र्सगंज जनपद सोनभद्र। 3. आरक्षी सुरेश कुमार, चौकी सुकृत, थाना राबट्र्सगंज जनपद सोनभद्र।

पांच वैवाहिक जोड़ों को साथ मे रहने के लिए राजी किया महिला थाना थानाप्रभारी ने

(आधुनिक समाचार सेवा)

सोनभद्र। जनपद में ङ्खमिशन शक्तिङ्ख नारी सुरक्षा, नारी सम्मान, नारी स्वावलम्बन के क्रम मे महिला थाना रॉबट्र्सगंज पर आयोजित परामर्श केन्द्र में थानाध्यक्ष महिला थाना उ0नि0 संतू सरोज मय टीम द्वारा महिला थाना रॉबट्र्सगंज में पति-पतने के बीच चल रहे विवाद के संम्बंध में 05 जोड़ा पति-पतने की समस्याओं को सुनते हुए उन्हें सुलझाया गया जिससे पति-पतने राजी-खुशी से आपस में एक साथ रहने के लिए सहमत हो कर घर गए । इसके अतिरिक्त 02 अन्य प्रकरणों में पति-पतने को निश्चित तिथि देते हुए उन्हें काउंसलिंग हेतु बुलाया गया । काउंसलिंग के दौरान महिला थानाध्यक्ष द्वारा परामर्श केन्द्र में आये दम्पतियों की पारिवारिक सम्बंधी प्रकरणों में उनकी काउंसलिंग की गयी तथा पति-पतने को आपस में विवाद को खत्म कर सुलह-समझौता कराते हुए साथ में रहने हेतु प्रेरित किया गया जिससे दोनों जोड़े हंसी-खुशी साथ मे रहने हेतु तैयार हो गये जिसपर पुलिस द्वारा उन्हें उनके आगामी जीवन की शुभकामनाएं दी गई ।

प्रतिमा स्थापना के पहले निकली भव्य कलश यात्रा

(आधुनिक समाचार सेवा)

(अनपरा) सोनभद्र। अनपरा नगर पंचायत के वार्ड नं-3 आजाद नगर स्थित बैसवार धर्मशाला प्रांगण में बैसवार सेवा समिति पश्चिमी परासी द्वारा विगत हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी शारदीय नवरात्र के पहले दिन सजे-धजे पंडाल में मां दुर्गा की भव्य प्रतिमा स्थापित की गई पहले दिन से ही पूजा-अर्चना के लिए श्रद्घालुओं की भारी भीड़ उमड़ रही है। शारदीय नवरात्र के पहले दिन मां दुर्गा की प्रतिमा स्थापना से पहले बाजे-गाजे व गजराज जी के साथ कलश व शोभायात्रा निकाली गई कलश यात्रा पूजा पंडाल से चलकर रेनुसागर मोड़ समीप नदी तक पहुंची यहां श्रद्घालुओं ने जल उठाया और बीना रोड से अनपरा मोड़ होते हुए वापस पूजा पंडाल पहुंचे। इस दौरान पुजारी गणेश राम (पप्पू) बैसवार ने विधि विधान से पूजा-अर्चना कर पहले कलश स्थापना की फिर पंडाल में मां दुर्गा की प्रतिमा को स्थापित किया गया यहां सुबह से भंडारे का प्रसाद ग्रहण करने के लिए भी बड़ी संख्या में समाज के सभी वर्ग के श्रद्घालुओं की भीड़ उमड़ रही है ! आयोजन समिति में रामजीवन बैसवार,शाखा राम बैसवार,गणेश राम (पप्पू) बैसवार,कांता राम,रामनरेश बैसवार,बंसी बैसवार, पाठान बैसवार,राजकुमार,राजेश पंडा,राजेश मुखिया,शिव प्रकाश,संतोष बैसवार,अवध राज,गुड्डू बैसवार,श्याम नारायण,सूरज,जगननथ बैसवार,अशोक कुमार,राम ललित बैसवार, रोहित कुमार,अरुण बैसवार शमिल रहे !

नवरात्र के पहले दिन मंदिर में भक्तो का सुबह से ही लगा ताता

(आधुनिक समाचार सेवा)

(अनपरा) सोनभद्र। नवरात्र के प्रथम दिन सोनभद्र के प्राचीन देवी स्थल आदी शक्ति पीठ मा ज्वालामुखी मंदिर में सुबह 3 बजे से ही भक्तों का ताँता लगा हुआ है । जिला मुख्यालय से तक़रीबन 100 किमी दूर शक्तिनगर में स्थित हैं, ज्वाला देवी के जिव्हे का अग्र भाग गिरा हुआ है जिसकी पूजा की जाती है जिसके वजह से ज्वालामुखी नाम पड़ा है। मान्यता के अनुसार हर मनोकामना पूर्ण होने वाला देवी अस्थल माना जाता हैं, मान्यता के अनुसार नवरात्र में मा ज्वालामुखी के दर्शन किए जाएँ तो हर मनचाही इच्छा होती है। यह मंदिर सोनभद्र जिले में स्थित है ऐसे में सोनभद्र जिला जो कुल पांच राज्यो से घिरा हुआ जिला है मध्यप्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश है ऐसे में नवरात्रि में दर्शन के लिए मंदिर के महंत द्वारा पूर्व में ही मंदिर में आने वाले दर्शनाथिर्यों के लिए पर्याप्त व्यवस्था कर दी जाती है। इसके साथ ही जिला प्रशासन द्वारा भी पर्याप्त फोर्स भी लगाया जाता है।

पुलिस अधीक्षक मिर्जापुर द्वारा विंध्याचल भ्रमण

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्ज़ापुर। पुलिस अधीक्षक मीरजापुर ठसंतोष कुमार मिश्रा '' द्वारा शारदीय नवरात्र मेला विन्ध्याचल में लगातार भ्रमणशील रहकर मंदिर में आये दर्शनाथिर्यों/श्रद्धालुओं को पर्याप्त पुलिस बल के साथ लाइन लगवाकर निर्बाधरूप से श्रद्धापूर्वक दर्शन कराने में सहयोग करते हुए।

सोमवार से शारदीय नवरात्रि प्रारंभ हो गया हैं

(आधुनिक समाचार सेवा)

(डाला) **सोनभद्र।** और मां वैष्णो मंदिर शक्तिपीठ धाम के परिषर में भव्य तरीके तैयारियां भी की गई दुकानें भी सजी हुई हैं और भक्तों की भीड़ भी देखने को मिली जयकारों से पूरा परिषर गूंज उठा।हिंदू धर्म में नवरात्रि का विशेष महत्व होता है। इस दौरान मां दुर्गा के 9 स्वरूपों की विधि-विधान से पूजा की जाती है. नवरात्रि के पहले दिन घटस्थापना की जाती है। नवरात्रि में स्थापना का विशेष महत्व होता है। नवरात्रि का पहला दिन मां शैलपुत्री की पूजा होती है। मां दुर्गा के 9 स्वरूपों में से मां शैलपुत्री पहला रूप हैं। आज डाला वैष्णो मंदिर में माँ वैष्णो देवी का कपाट भोर में चार बजे खोलकर माँ की आरती व घण्टियाँ गूँजने लगी और मंदिर परिसर में प्रसाद वितरण एवं माला फूल अन्य दुकानें भी सजी हुई हैं और भक्तों की भीड़ भी देखने को मिली।वहीं सुभाष मित्तल के द्वारा श्रद्धालुओं के लिए भंडारे का भी आयोजन किया गया था और श्रद्धालुओं ने मां वैष्णो देवी का दर्शन पुजन करते हुए भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया वहीं सुरक्षा को लेकर चोपन थाना पुलिस एवं डाला चौकी इंचार्ज समेत डाला पुलिस मौजूद रहे।

रोहित शर्मा ने डर के मारे १९वें की जगह फिंकवाया १८वां ओवर

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। भारतीय तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार ने 19वां ओवर फेंका था 16 रन दिए थे जिसकी वजह से टीम इंडिया को हार मिली थी। यही नहीं इससे ओवर में काफी मंहगे साबित हो रहे थे इसकी वजह से हैदराबाद में कप्तान रोहित शर्मा ने अपनी रणनीति में बदलाव किया और उन्हें पहली पारी में 19वें की जगह 18वां ओवर फेंकने के लिए दिया, लेकिन वो यहां भी पिट गए। भुवी ने 18वें ओवर में 21 रन दिए और आस्ट्रेलिया का स्कोर 140 से 161 पर पहुंच गया। यानी आखिरी ओवर्स में भुवी का रन लुटाना इस मैच में भी जारी रहा। इस मैच में भुवी ने 3 ओवर में 39 रन देकर एक विकेट लिया। इस मैच में टीम इंडिया के स्टार गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की भी जमकर पिटाई हुई और उन्होंने 4 ओवर में 12.50 की औसत से 50 रन दे दिए और उन्हें कोई विकेट भी नहीं मिला। वहीं अक्षर पटेल ने 4 ओवर में 33 रन देकर 3 विकेट लिए जबकि हार्दिक ने 3 ओवर में 23 रन, चहल ने 4 ओवर में 22 रन एक विकेट, हर्षल पटेल ने 2 ओवर में 18 रन एक विकेट लिया। इस मैच में आस्ट्रेलिया ने 20 ओवर में 7 विकेट पर 186 रन बनाए। हालांकि भारत ने जीत के लिए मिले टारगेट को हासिल कर लिया और 4 विकेट से मैच जीतकर 2-1 से सीरीज जीत ली।

आस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टी20 मैच में 4 ओवर में 52 रन दिए और ये उनके टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट करियर का सबसे महंगा स्पैल साबित हुआ था। यही नहीं इस मैच में उन्होंने दूसरी पारी में पहले भी एशिया कप 2022 में उन्होंने पाकिस्तान और श्रीलंका के खिलाफ भी 19वां ओवर फेंका था और काफी रन लुटाए थे और भारतीय टीम को हार मिली थी। भुवी भारत के लिए टी20 में 19वें

दिनेश कार्तिक ने किया खुलासा, कोहली नहीं यह खिलाड़ी उठाता है वर्कआउट के दौरान सबसे ज्यादा वजन

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। किसी भी खेल में फिटनेस का बड़ा महत्व होता है और यही बात क्रिकेट के साथ भी है। भारतीय क्रिकेट टीम के खिलडियों में बीते कुछ वर्षों से फिटनेस को लेकर बहुत ही ज्यादा और सबसे लिए फायदेमंद भी। भारतीय टीम के खिलाड़ी फिटनेस के लिए जो वर्कआउट करते हैं उसकी तस्वीर सबके सामने आती रहती है। इसमें विराट कोहली भी शामिल हैं जो अक्सर भारी वेट के साथ वर्कआउट करते हुए

क्रेज है और ये समय की मांग है साथ ही मैदान पर अच्छा प्रदर्शन करने के लिए सबसे जरूरी भी है। टीम इंडिया के मौजूदा खिलाड़ियों में अगर सबसे फिट खिलाड़ियों की बात करते हैं तो विराट कोहली का नाम सबसे ऊपर आता है। कोहली जब टीम के कप्तान थे तब उन्होंने फिटनेस को लेकर जो एक कल्चर टीम में डेवलप किया था वो कमाल का था सोशल मीडिया पर वीडियो या फोटो शेयर करते रहते हैं। विराट अपनी फिटनेस के लिए हद से ज्यादा कड़ी मेहनत करते हैं और काफी वेट भी उठाते हैं, लेकिन टीम इंडिया का कौन मौजूदा खिलाड़ी सबसे ज्यादा वेट उठाता है इसके बारे में टीम के सीनियर विकेटकीपर-बल्लेबाज दिनेश कार्तिक ने बताया।

भांगड़ा कर रहे शिखर धवन को देखकर जडेजा ने कहा- इसकी शादी करवा दीजिए

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। शिखर धवन अक्सर अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर फनी वीडियोज डालते रहते हैं जिसे और वहीं पर धवन डांस मस्त अंदाज में करते हुए नजर आ रहे हैं। धवन के इस डांस को देखकर रवींद्र जडेजा उनकी तरफ इशारा करते हुए कहते शिखर धवन साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेले जाने वाली तीन मैचों की वनडे सीरीज में खेलते हुए नजर आएंगे। साउथ अफ्रीका के खिलाफ

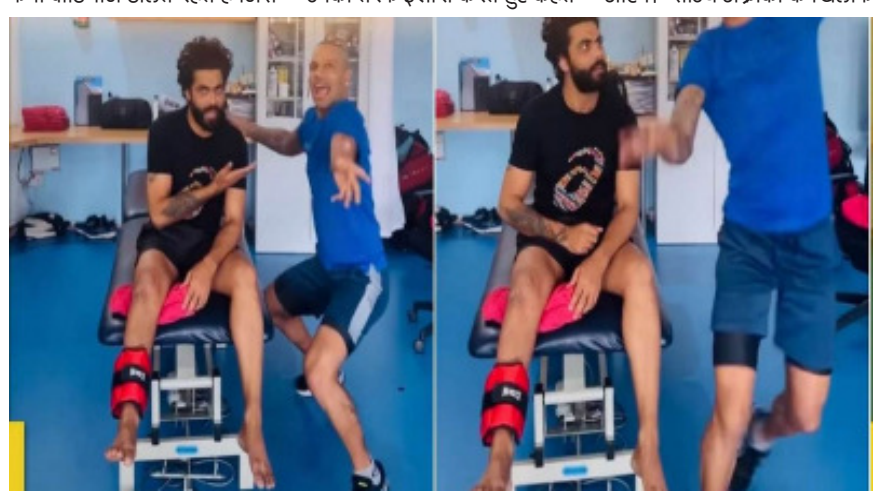

क्रिकेट फैंस खूब पसंद करते हैं। अब एक बार फिर से उन्होंने एक वीडियो अपने इंस्टा पर शेयर किया जो बेहद मजेदार है और इसे खूब पसंद किया जा रहा है। इस वीडियो में टीम इंडिया के आलराउंडर रवींद्र जडेजा भी हैं जो इन दिनों अपने घुटने की सर्जरी के बाद ठीक होने की प्रक्रिया में हैं। टीम इंडिया के ओपनर बल्लेबाज शिखर धवन ने जो वीडियो शेयर किया है उसमें वो जडेजा के साथ हैं। इस वीडियो में जडेजा का इलाज चल रहा है है कि इसकी शादी करवा दीजिए, जिम्मेदारी आएगी तो सुधर जाएगा। ये डायलाग हिन्दी फिल्म सूर्यवंशम की है। जडेजा एक तरफ जहां अभी मैदान से दूर हैं तो वहीं शिखर धवन भी भारत के लिए आखिरी बार जिम्बाब्वे के खिलाफ वनडे सीरीज में खेलते हुए नजर आए थे। उन्हें पहले इस वनडे सीरीज के लिए टीम इंडिया का कप्तान बनाया गया था, लेकिन केएल राहुल की वापसी के बाद उन्हें टीम का उप-कप्तान बनाकर वहां भेजा गया था। अब इस घरेलू वनडे सीरीज में दूसरी टीम खेलेगी क्योंकि रोहित शर्मा की कप्तानी वाली टीम इंडिया टी20 वर्ल्ड कप 2022 में हिस्सा लेने के लिए आस्ट्रेलिया जाएगी। इस स्थिति में माना जा रहा है कि शिखर धवन प्रोटियाज के खिलाफ वनडे सीरीज में भारतीय टीम की कप्तानी कर सकते हैं। वहीं रवींद्र जडेजा अभी तीन से चार महीने मैदान से दूर रह सकते हैं। रवींद्र जडेजा को अपनी घुटने की इंजरी की वजह से टी20 वर्ल्ड कप 2022 से भी दूर होना पड़ा।

राशिफल

मेष-: खुशियों से भरा एक अच्छा दिन। आज आपके सामने आने वाले निवेश के नए अवसरों पर विचार करें।

वृष-: आज का दिन एक नया तोहफा लेकर आया है। आज आपके मन में कई सकारात्मक भावनाएँ आएंगी।

मिथुन-: आज आपको काम की गुणवत्ता बनाए रखनी होगी। अजनबियों पर ज्यादा भरोसा न करें। थकान और चिंता रहेगी।

कर्क-: एक सज्जन के दिव्य वचन आपको संतुष्टि और सांत्वना देंगे। क्रेडिट मांगने वाले लोगों को अनदेखा करें।

सिंह-: आज आपका दिन सामान्य रहेगा। माता की कृपा से किए गए कार्यों में आपको सफलता मिल सकती है। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

कन्या-: आज सुबह आपका मन क्रोधित रहेगा। व्यर्थ का धन व्यय होगा। अगर किसी को गुमराह किया जा रहा है, तो आप उस पर नजर रख सकते हैं, लेकिन आपको इसे गुप्त रूप से करन।

तुला-: अब इसका कोई भी उपयोग दिल पर अतिरिक्त दबाव डालेगा। आप में शीघ्र धन कमाने की प्रबल इच्छा होगी। ऐसा लगता है कि आप पारिवारिक मोर्चे पर बहुत खुश नहीं हैं

वृश्चिक-: आज का दिन आपके लिए शानदार रहेगा। ऑफिस के किसी जरूरी काम में सीनियर आपकी मदद कर सकते हैं, जिससे काम आसानी से पूरे हो जाएंगे।

धनु-: आज किसी व्यवसायी व्यक्ति को नया बिजनेस पार्टनर या ऑफर मिल सकता है। अविवाहितों को लंबे समय बाद मिलने का मौका मिल सकता है।

मकर-: आज आपका आत्मविश्वास और ऊर्जा का स्तर ऊंचा रहेगा। आप यात्रा करने और पैसे खर्च करने के मूड में रहेंगे - लेकिन अगर करते हैं ।

कुंभ-: आज का दिन आत्मविश्वास और उम्मीदों से भरा दिन है। आप जीवन में कुछ करने का निणय ले सकते हैं, कुछ नए अनुभव आपको प्राप्त होंगे।

मीन-: प्रेमी का साथ पाना आज सबसे बड़ी चुनौती होगी। आपका प्रेमी आपसे किसी बात को लेकर नाराज हो सकता है। किसी मित्र को परेशानी या परेशानी में देखकर आप भावुक हो जाएंगे।

रोहित शर्मा टी2 में भारत के दूसरे सबसे सफल कप्तान बने

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। रोहित शर्मा की कप्तानी में भारत ने तीन मैचों की टी20 सीरीज के तीसरे मुकाबले में आस्ट्रेलिया को 6 विकेट से हरा दिया। इस सीरीज में भारत को पहले मैच में हार मिली थी, लेकिन फिर टीम इंडिया ने अच्छी वापसी ने इसके साथ ही विराट कोहली का रिकार्ड तोड़ दिया जिनकी कप्तानी में भारत ने 32 मैच जीते थे और अब वो इस मामले में खिसककर तीसरे नंबर पर आ गए। वहीं भारत ने एम एस धौनी की कप्तानी में सबसे ज्यादा टी20 मैच जीते हैं और वो पहले नंबर पर हैं। धौनी

करते हुए दूसरे और तीसरे मैच को जीतकर सीरीज अपने नाम कर ली। यही नहीं तीसरे मैच में जीत दर्ज करने के साथ ही रोहित शर्मा टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में भारत के दूसरे सबसे सफल कप्तान बन गए और विराट कोहली का रिकार्ड तोड़ दिया। आस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टी20 में रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय टीम ने अपना 33वां मैच जीता और क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप में भारत के दूसरे सबसे सफल कप्तान बनने का गौरव हासिल किया। रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय टीम ने कुल 42 मैच जीते थे। भारत की तरफ से एक साल में सबसे ज्यादा टी20 मैच जीतने का रिकार्ड एम एस धौनी के नाम पर दर्ज था। धौनी ने साल 2016 में कुल 15 मैच जीते थे, लेकिन अब रोहित शर्मा ने साल 2022 में कुल 15 मैच जीतकर उनकी बराबरी कर ली। अब रोहित शर्मा के पास एम एस धौनी का रिकार्ड तोड़ने का बेहतरीन मौका है। अगर वो एक और मैच जीत जाते हैं तो धौनी को पीछे छोड़ देंगे।

भारत ने पाकिस्तान को पीछे छोड़ बनाया वर्ल्ड रिकार्ड, एक कैलेंडर वर्ष में जीते सर्वाधिक टी-20 मैच

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। भारतीय टीम ने रोहित शर्मा की कप्तानी में आस्ट्रेलिया की टीम को हैदराबाद में खेले गए तीन मैचों की टी20 सीरीज के आखिरी मैच में 6 विकेट से हरा दिया। इस जीत के साथ भारतीय टीम एक कैलेंडर वर्ष में सबसे ज्यादा टी-20 मैच जीतने के मामले में पहले नंबर पर आ उसने जिंबाब्वे को पीछे छोड़ दिया। जिंबाब्वे ने भी इस कैलेंडर वर्ष में घर पर नौ मैच जीते हैं। आपको बता दें कि भारत और आस्ट्रेलिया के बीच तीन मैचों की टी20 सीरीज खेली गई जिसमें टीम इंडिया ने रोहित शर्मा की कप्तानी में आरोन फिंच की कप्तानी वाली कंगारू टीम को 2-1 से हरा दिया। दोनों देशों की बीच तीसरा मैच हैदराबाद में

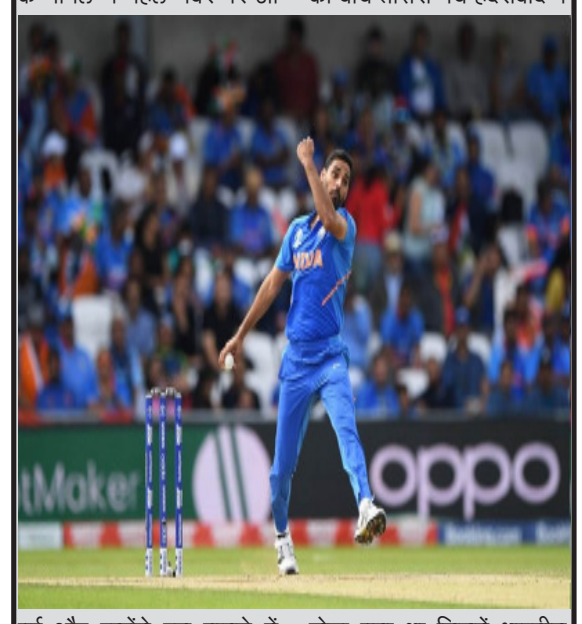

गई और उन्होंने इस मामले में पाकिस्तान को पीछे छोड़ दिया। भारत ने इस कैलेंडर वर्ष यानी 2022 में 27 टी-20 मैचों में 21वीं जीत हासिल की। पाकिस्तान ने वर्ष 2021 में 29 टी-20 में से 20 जीते थे। भारत ने कभी इससे पहले एक कैलेंडर वर्ष में इतनी जीत हासिल नहीं की थी। भारत ने घरेलू सरजमीं पर 12 में से 10 मैच जीते हैं। वह इस एक कैलेंडर वर्ष में घर पर सबसे ज्यादा टी-20 जीतने के मामले में शीर्ष पर आ गया। खेला गया था जिसमें भारतीय टीम को 6 विकेट से जीत मिली। भारत को इस मैच में जीत के लिए 187 रन का लक्ष्य मिला था, लेकिन टीम इंडिया ने विराट कोहली के 63 रन (4 छक्के और 3 चौके) व सूर्यकुमार यादव के 69 रन की पारी के दम पर इस टारगेट को 19.5 ओवर में 6 विकेट शेष रहते हासिल कर लिया और सीरीज भी जीत ली। इस मैच में सूर्यकुमार यादव को अपनी बेहतरीन पारी के लिए प्लेयर आफ द मैच चुना गया।

सचिन तेंदुलकर की तरह था रोजर फेडरर का करियर, टेनिस के एक युग का हुआ अंत

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। टेनिस के दो महारथियों रोजर फेडरर और रफेल नडाल ने एक-दूसरे के बगल में बैठकर हाथ पकड़कर एक साथ रोते हुए लोगों को एक और अविस्मरणीय पल दिया जिसे भविष्य में भी कभी नहीं भूला जा सकेगा। दोनों टेनिस कोर्ट पर बड़े प्रतिद्वंद्वी रहे हैं और एक-दूसरे को हराने के लिए कई रणनीति बनाते रहे हैं, लेकिन जब ये दोनों एक साथ रोने लगे तो लगा ही नहीं की ये कभी प्रतिद्वंद्वी रहे होंगे। 41 वर्षीय फेडरर ने शुक्रवार की देर रात को अपने चमकदार करियर को अलविदा कहा। स्विट्जरलैंड के इस स्टार खिलाड़ी ने पिछले सप्ताह घोषणा की थी कि वह लेवर कप के बाद टेनिस से संन्यास ले लेंगे। इसके बाद उन्होंने स्पष्ट किया कि डबल्स मैच उनका आखिरी मैच होगा। लंदन के ओ टू एरेना में लगभग एक भी आंख ऐसी नहीं थी जो नम नहीं हो जहां फेडरर ने लेवर कप के दौरान टेनिस के खेल से अश्रुपूर्ण विदाई ली। यह अविस्मरणीय और भावनात्मक क्षण था। जो खिलाड़ी फौलाद के बने प्रतीत होते थे वे भावनाओं में पिघलते हुए नजर आ रहे थे। कोई संकोच नहीं था, कोई शर्म नहीं थी।यह ऐसा ही अवसर था। जब फेडरर अपना आखिरी मैच खेलने के बाद अपने साथियों, अपने प्रशंसकों और परिवार का शुक्रिया अदा करने लगे तो उनकी आंखों से आंसू छलक पड़े और फिर वह जोर-जोर से रोने लगे। यह अविस्मरणीय क्षण था, आखिर फेडरर भी इंसान ही हैं। इसमें कोई

संदेह नहीं कि ये दोनों टेनिस कोर्ट पर कदम रखने वाले सबसे कड़े प्रतिद्वंद्वी रहे जिन्होंने खेल को फिर से परिभाषित किया। उन्होंने दिखाया कि मानव शरीर को कितना मजबूत किया जा सकता है और क्या हासिल किया जा सकता है। और इसके बावजूद उन्होंने दिखाया कि उनके फौलादी शरीर के अंदर उनके पास बच्चों जैसा दिल है जो जीत के उत्साह और हार की पीड़ा से कहीं अधिक चीजें समझता है। उन्होंने दिखाया कि खेल के मैदान में कड़े प्रतिद्वंद्वी होने के बावजूद आप अपने प्रतिद्वंद्वियों के प्रति सम्मानपूर्ण रह सकते हैं। यह एक प्रेरक मानवीय पहलू है जो फेडरर और नडाल को आज की दुनिया में एक अलग मुकाम पर ले जाता है जब आक्रामकता की आड़ में दूसरे का अपमान करना फैशन बन गया कैसे 'लाकर रूम' (जहां खिलाड़ी अपना सामान रखते हैं और कपड़े बदलते है) के अंदर फेडरर 'कृपया' और 'धन्यवाद' के बिना बात नहीं करते। ऐसा नहीं है कि उनके पास ऐसे क्षण नहीं थे जहां वे लड़खड़ा गए हों, लेकिन दो दशकों से अधिक समय तक मर्यादा, सम्मान और नम्रता बनाए रखना आश्चर्यजनक है। उनके पास सबसे मुश्किल शाट हैं, लेकिन फिर भी अहंकार उससे कोसों दूर था। वह एक जादुई शाट खेलेते थे, लेकिन ऐसा करने के बाद चिल्लाते नहीं थे। बस एक प्यारी सी मुस्कान के साथ वह बेसलाइन पर वापस चले जाते और अपने अगले शाट के लिए तैयार हो जाते। सभी का दिल जीताः फेडरर ने अपने करियर में कई ट्राफी अपने नाम की और कई रिकार्ड बनाए। उन्होंने अपने करियर में न सिर्फ 20 ग्रैंडस्लैम जीते जबकि अपने व्यक्तित्व से अपने प्रतिद्वंद्वियों और प्रशंसकों का दिल भी जीता। करियर का आखिरी मैच नडाल के साथ हारे फेडररः यह टेनिस के लिए विशेष दिन था, जब रोजर फेडरर अपना आखिरी मैच खेलने के लिए टेनिस कोर्ट पर उतरे और उनका साथ कोई और नहीं बल्कि वह राफेल नडाल दे रहे थे जिनके साथ उनकी कई वर्षों तक कड़ी प्रतिद्वंदिता रही। उन्होंने लेवर कप में अपना आखिरी मैच खेला जिसमें वह टीम यूरोप की तरफ से डबल्स मैच खेलने के लिए कोर्ट पर उतरे।

2022 में टी20 में सबसे ज्यादा छक्के व सबसे ज्यादा रन सूर्यकुमार यादव के नाम

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। भारतीय मध्यक्रम के बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव ने आस्ट्रेलिया के खिलाफ हैदराबाद में खेले गए तीसरे टी20 मैच में जमकर अपने हाथ दिखाए। सूर्यकुमार ने इस मैच में गजब की पारी खेली और 5 छक्के व 5 चौकों की मदद से 36 गेंदों पर 69 रन की पारी खेली। कप्तान रोहित शर्मा और केएल राहुल के जल्दी आउट हो जाने के बाद वो सूर्यकुमार ही रहे जिन्होंने भारतीय टीम की जीत की नींव रखी और बाद में विराट कोहली ने इसे आगे बढ़ाया और टीम इंडिया को जीत मिली। सूर्यकुमार यादव ने आस्ट्रेलिया के खिलाफ खेली अपनी पारी के दौरान 5 छक्के लगाए और वो साल 2022 में टी20 में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाज है। यही नहीं एक कैलेंडर वर्ष में सबसे ज्यादा छक्के लगाने के मामले में उन्होंने अब पाकिस्तान के बल्लेबाज मो. रिजवान की बराबरी कर ली। रिजवान ने साल 2021 में कुल 42 छक्के एक कैलेंडर वर्ष में लगाए थे। सूर्यकुमार के पास अब अगले मैच में रिजवान के इस रिकार्ड को तोड़ने का शानदार मौका होगा। आस्ट्रेलिया के खिलाफ खेली अपनी 69 रन की पारी के दम पर अब सूर्यकुमार यादव टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में इस साल यानी 2022 में सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में पहले नंबर पर आ गए हैं। सूर्यकुमार यादव ने इस साल अब तक खेले 20 मैचों की 20 पारियों में 37.88 की औसत और 182.84 की औसत से कुल 682 रन बनाए हैं जिसमें एक शतक और चार अर्धशतक भी शामिल है। उनका बेस्ट स्कोर इस साल 117 रन है और उन्होंने अब तक इन मैचों में कुल 58 चौके और 42 छक्के लगाए हैं। वहीं 626 रन बनाकर नेपाल के बल्लेबाज डीएस आयरी दूसरे नंबर पर हैं।

सम्पादकीय

पीएम मोदी के नेतृत्व में भाजपा और विपक्ष के समक्ष राजनीतिक जमीन का संकट

एक हालिया रिपोर्ट में कहा गया है कि 2014 के बाद से सीबीआई द्वारा गिरफ्तार या छापेमारी करने वाले 95 फीसदी राजनेता विपक्षी दलों के हैं। केंद्र सरकार ने गुप्त चुनावी बांड योजना, और स्वतंत्र मीडिया चैनलों को धमकाकर और सच बोलने वाले पत्रकारों को गिरफ्तार करके भी राजनीतिक प्रक्रिया को अपने पक्ष में विकृत करने की कोशिश की है। नरेंद्र मोदी द्वारा भाजपा का नियंत्रण अपने हाथ में लेने के बाद से उनकी पार्टी ने 2014 और 2019 के आम चुनावों में अपने दम पर बहुमत हासिल किया है। यह ऐसी उपलब्धि है, जिसे हासिल करने के करीब भी वह कभी नहीं पहुंच पाई थी। कभी उत्तर और पश्चिम तक सिमटी रहने वाली भाजपा ने पूर्व और दक्षिण में भी अपना प्रभाव बढ़ाया है। मोदी के राष्ट्रीय फलक पर आने की अपनी महत्वाकांक्षा को सार्वजनिक करने से पहले तक बहुत कम लोगों ने सोचा होगा कि भाजपा पश्चिम बंगाल में दूसरे नंबर की पार्टी बन सकती है, अपने दम पर असम में सत्ता में आ सकती है और तेलंगाना में भी सत्ता हासिल करने के करीब पहुंच सकती है। हालांकि चुनावों में भाजपा की प्रभावी जीत प्रभावी शासन में नहीं बदल सकी है। मई, 2014 में नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद से भारत आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और संस्थागत रूप से अपने रास्ते से भटक गया। महामारी के टूटे कहर से पहले ही नोटबंदी और पैबंद लगी जीएसटी ने अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा दिया था और फिर कोविड के दौरान प्रधानमंत्री की नीतियों ने उसे और नुकसान पहुंचाया। मोदी की सत्ता के दौरान खतरनाक रूप से संपत्ति कुछ पसंदीदा पूंजीपतियों के हाथों में केंद्रित हो गई है और दूसरी ओर श्रम भागीदारी दर में गिरावट आई है। केंद्रीय गृहमंत्री की देखरेख में मुस्लिमों को कलंकित करने और हमारे सबसे अधिक आबादी वाले राज्य के मुख्यमंत्री द्वारा उत्साह के साथ इसे आगे बढ़ाने से पहले से कमजोर सामाजिक ताना-बाना और तार-तार हो गया है। हमारे श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में योग्यता के बजाय विचारधारा के आधार पर कुलपतियों/ निदेशकों की नियुक्तियां किए जाने से विज्ञान तथा ज्ञान सृजन के क्षेत्र को बड़ा झटका लगा है। कुछ ऐसे सार्वजनिक संस्थान जिनसे स्वतंत्र रूप से काम करने की अपेक्षा रही है, वे हिंदुत्व की विचारधारा के औजार बन गए हैं; और अन्य संस्थान निर्लज्ज तरीके से सत्ता के करीबी पूंजीपतियों के लिए पक्षपाती हो गए हैं। कुल मिलाकर मोदी सरकार का सत्ता में रहने का रिकॉर्ड अटल बिहारी वाजपेयी और मनमोहन सिंह की सरकारों की तुलना में काफी कमतर है। वे अर्थव्यवस्था के संचालन में अक्षम हैं और उन्होंने समाज का गहराई से ध्रुवीकरण कर दिया है, उन्होंने सांविधानिक संस्थानों को खोखला कर दिया और हमारे लोकतंत्र को गंभीर रूप से कमजोर कर दिया, इसके बावजूद मोदी की पार्टी को इन पंक्तियों के लिखे जाने तक राष्ट्रीय स्तर पर किसी तरह की चुनौती नहीं है। इस साल की शुरुआत में हुए पांच राज्यों के चुनावों में चार में जीतने के बाद भाजपा 2024 के आम चुनाव में जीत की प्रबल दावेदार हो गई। उनकी यह आरामदायक स्थिति उनके वित्तीय संसाधनों, वैचारिक प्रतिबद्धता, संगठनात्मक ताकत और राज्य संस्थानों के नियंत्रण के कारण है, और दूसरी तरफ एक विश्वसनीय राष्ट्रीय विपक्ष की कमी है। एक उदासीन प्रशासनिक रिकॉर्ड के साथ स्थायी राजनीतिक सफलता की परिघटना आधुनिक दुनिया में असामान्य नहीं है। रूस में व्लादिमीर पुतिन, तुर्की में रिसेप एर्डोगन और जिंबाब्वे में रॉबर्ट मुगाबे ने लंबे समय तक सत्ता सुख भोगा है, बावजूद इसके कि उनके शासनकाल में उनके देश की अर्थव्यवस्था, संस्थाएं, सामाजिक ताना-बाना और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा छिन्न-भिन्न हो गई। भारत के एक इतिहासकार के रूप में मैं छोटी-सी तुलना करना चाहूंगा, जो कि वास्तव में इसके काफी करीब है। मुझे लगता है कि नरेंद्र मोदी और भाजपा केंद्र के स्तर पर उसी का अनुकरण कर रहे है, जो ज्योति बसु और माकपा ने पश्चिम बंगाल में पहले किया था। वाम मोर्चा, माकपा जिसका प्रमुख घटक था, 34 बरसों तक कोलकाता में सत्ता में रहा। उसमें से 23 साल ज्योति बसु मुख्यमंत्री रहे। और वह कोई प्रभावी मुख्यमंत्री भी नहीं थे। भारत में मोदी की भाजपा की तरह पश्चिम बंगाल में बसु की माकपा चुनाव जीतने में माहिर थी और शासन में अयोग्य। 1977 में जब ज्योति बसु पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री बने, उस समय उसके पास मजबूत औदयोगिक आधार था, शानदार यूनिर्विसिटी थीं, तट तक पहुंच थी और समृद्ध सांस्कृतिक जीवन था।

देव आनंद जन्मदिन विशेषः जिंदगी का हर पल साथ निभाने वाला चितेरा

सदाबहार अभिनेता देव आनंद ताजिंदगी फिल्मी पर्दे पर रोमांस के देवता की तरह नजर आते रहे और दर्शकों की कई पीढ़ियों को अपनी दिलकश अदाओं से लुभाते रहे। फिल्मी पर्दे से अलग एक और देव आनंद भी थे जो ऊर्जा से लबरेज होने के साथ ही एक गंभीर दार्शनिक और अपने आप में एक वैरागी भाव लिए हुए थे। उन देव आनंद के मैंने अनगिनत बार दर्शन किए, उनकी उन्हीं मधुर स्मृतियों को नमन करते हुए यह संस्मरणात्मक आलेख देव आनंद मुझे हर मुलाकात में एक गंभीर दार्शनिक, महान कर्मयोगी और संन्यासी की तरह लगते रहे। दुनिया की हर चीज से 'डिटैच्ड' यानी निस्संग। अपने आखिरी दिनों में उन्होंने मुझसे एक मुलाकात के दौरान कहा भी कि मैं अब तो गाइड के स्वामी जैसा ही जीवन जी रहा हूं। उनकी सदाशयता और उनका मनुष्यत्व उनके अभिनेता पर हमेशा से भारी रहा। देव आनंद एक व्यक्ति

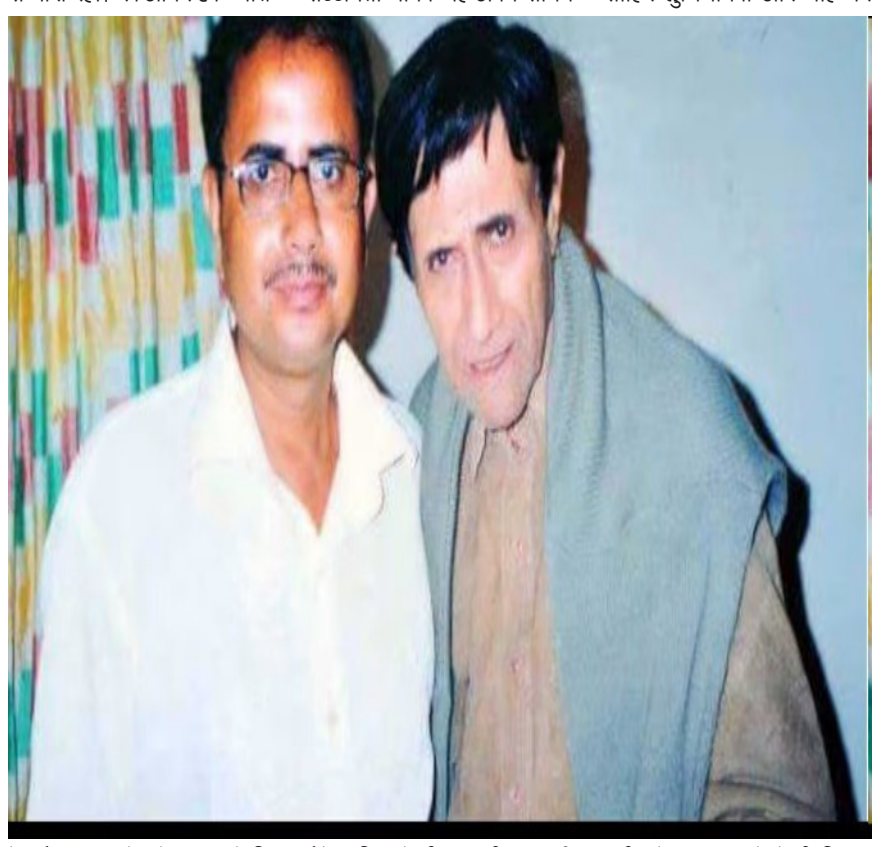

के तौर पर इतने बड़े इंसान थे कि आपके लिए यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि उनके अभिनय पक्ष पर बात करें या उनके इंसानी पहलू पर बात की जाए। क्योंकि इंसानी पहलू काफी बड़ा था। मैंने उनके इस पक्ष को उनसे बातें करते हुए अक्सर महसूस किया। 22 मई 2007 की शाम की बात है। उनके पाली हिल, बांद्रा वाले आनंद रिकॉर्डिंग रूम के उनके पेंट हाउस में उनसे लंबा साक्षात्कार हुआ। उनकी फिल्म 'गाइड' पर लंबी बातचीत हुई। बातचीत खत्म होने के बाद अचानक उन्होंने कहा कि 'दीप हम तो गाइड में खो गए। हम तो यह भी भूल गए कि हमें चाय भी पीनी है। चार महीने बाद उनके जन्मदिन पर उनकी आत्मकथा लांच होने वाली थी।मेरी उनसे एक जमाने से मुलाकातें होती आ रही थीं पर इंटरव्यू का ये मौका पहला था। मुझे विदा करते वक्त उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा- 'दीप मेरी ऑटोबायोग्राफी मेरे बर्थ डे यानी 26 सितंबर को रिलीज होने जा रही है और तुम्हें यहां आना है। पहले मेरी किताब आने दे, उसके बाद अपनी किताब छपवाना।'देव आनंद को मालूम था कि मैं एक किताब लिख रहा हूं और उनके इंटरव्यू के इंतजार में ही इसका प्रकाशन लंबित था। मेरी किताब के प्रकाशन से भला उनका क्या लेना देना होता, लेकिन यह उनकी सज्जनता थी कि वह अपने सामने बैठे व्यक्ति को भी बराबरी का दर्जा देते थे। ऐसे मिला इंटरव्यू फिल्म- 'लव एट टाइम्स स्क्वेयर' रिलीज हो चुकी थी। मैं उनसे मिलने पाली हिल गया था। उन्होंने कहा, 'मैं अभी अभी न्यूयॉर्क से लौटा ही हूं और थका हूं। कल नहीं, परसों नहीं, तरसों वीरवार को मिलेंगे हम।' उसके बाद मैं अभिनेता चंद्रशेखर के यहां इंटरव्यू करने चला गया। लंच पर देव साहब का जिक्र चला और मैंने उन्हें बताया कि देव साहब मिलते जरूर है पर इंटरव्यू के लिए टाइम कभी नहीं देते। चंद्रशेखर के कहने पर मैंने उनके घर से फोन लगाया और उनकी इंटरव्यू के लिए तय किए गए दिन की याद दिलाई। वह तपाक से बोले, 'मैं तो हिन्दुस्तान टाइम्स और टाइम्स ऑफ इंडिया को इंटरव्यू दे चुका हूं और अब मैं नई फिल्म पर काम कर रहा हूं। उनकी नई फिल्म प्रख्यात सितार वादक पंडित रविशंकर की पुत्री नोरा जोंस को लेकर थी। बाद में यह फिल्म बन नहीं सकी। एक बार उनके पीए अशोक सिन्हा की मार्फत भी उनका इंटरव्यू लेने की मैंने कोशिश की पर बात बनी नहीं। बाद में फिल्मकार शक्ति सामंत की सिफारिश पर मुझे देव आनंद का विस्तृत इंटरव्यू मिला। शिकायत भी पूरे मन से सुनी स्देव आनंद आत्मकथा मुंबई में लांच हुई तो मैं वहां नहीं पहुंच सका। बहुत सुंदर आत्मकथा लिखी थी पर उसमें साहिर लुधियानवी और मोहम्मद रफी को कुछ लाइनों में ही निपटा दिया गया था। एक दिन मैंने उन्हें फोन लगाया। दूसरी तरफ देव साहब आए तो मैंने कहा, 'आपकी आत्मकथा छह बार पढ़ चुका हूं। आपने अपने संघर्ष के दिनों के साथियों मारिया और नीलोफर को दो-दो पेज दिए है, पर अपनी जिन्दगी का थीम सांग लिखने वाले साहिर लुधियानवी और इसे गाने वाले मोहम्मद रफी साहब को कुछ ही पंक्तियों में निपटा दिया। उन्होंने फौरन कहा, बहुत अच्छी बात कह रहे हो। पर मेरे उनके बारे में कम लिखने से उनकी महानता में कोई कमी नहीं होने वाली। दरअसल, लंबा कोई पढ़ता नहीं।'मैं जब भी

उनसे मिलने मुंबई जाता तो उनके ड्राइवर प्रेम दुबे से अपना संदेश भीतर भेजता। फौरन उनका जवाब आता, दीप को बुलाओ। प्रेम दुबे ही मेरे और देव साहब के बीच अरसे तक संदेशवाहक का काम करते रहे। देव साहब के पास जाने पर मैंने हमेशा एक बात नोट की, मैं जब भी अकेला गया तो मेरा भरपूर स्वागत हुआ। अगर मेरे साथ कोई दूसरा व्यक्ति चला जाए तो वह असहज हो जाते थे और आसानी से मिलते नहीं थे। ऐसा ही एक वाक्या लेखक प्रहलाद अग्रवाल का है। वह देव आनंद पर किताब लिखना चाहते थे और देव साहब का मानना था कि छुटपुट मुलाकातों से भला कोई कैसे उन पर किताब लिख सकता है। तमाम कोशिशें की मैंने उनसे प्रहलाद अग्रवाल को मिलाने की लेकिन बात बनी नहीं। आखिरी दांव मैंने यही चला कि बस एक बार वह उनको देखना चाहते हैं। देव साब मिले। एक घंटे का वक्त भी दिया। बहुत हंसी खुशी हम वहां से विदा हुए। पहाड़ों में बसता था मन मेरा और देव साहब का कुछ ऐसा आत्मीय रिश्ता बन गया था कि जब भी मेरा मन करता मैं उनके मोबाइल पर फोन कर लेता और एक भी दिन ऐसा नहीं हुआ कि जब उन्होंने फोन न उठाया हो। एक दिन मैंने उन्हें फोन किया तो वह घर पर ही थे पर थोड़ा उद्विग्न से थे। बोले, 'भट्ट आई हैव फीवर, आई एम टेकिंग हॉट मिल्क।' मैंने माफी मांगते हुए फोन काट दिया। एक दिन तो गजब हुआ। मैंने उन्हें फोन किया। वह घर पर ही थे। बोले, 'दीप मैं अभी थोड़ी देर में बहुत दूर उड़ जाने वाला हूं।' और उन्होंने वैसी ही आवाज भी निकाली जैसे कि वह बस उड़ने ही वाले हों। मैंने सोचा कहीं बाहर जा रहे रहे होंगे। शाम को मैंने उनके ड्राइवर प्रेम को फोन लगाया और पूछा, 'देव साहब कहां है।' देव साहब ऑफिस में ही थे। उन्हें हवाओं से प्यार था, पहाड़ों से बेइंतहा मुहब्बत थी। नदी का बहाव उन्हें बहुत पसंद था। एक रोज बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, 'मैं वैसे रहने वाला गुरदासपुर का हूं पर मुझे लगता है मेरी आत्मा कहीं पहाड़ के अंदर ही फंसी पड़ी है। कौन जाने, कौन कहां का है, गॉड नोज।' हर उम्र में जवां व्यक्तित्व वाले देव साब देव आनंद साहब की मोहब्बत के मैंने बहुत रंग देखे हैं। जब उनकी फिल्म 'चार्जशीट' रिलीज हुई तो हल्द्वानी की प्रेम टाकीज में फिल्म का एक बड़ा सा कपड़े का पोस्टर लगा। मैंने उन्हें फोन पर बताया कि चार्जशीट मेरे अपने शहर में भी प्रदर्शित होने जा रही है। उनको लगा कि फिल्म लग गई है तो बोले 'फिल्म देखकर उसपर कुछ लिखो।' मैंने उन्हें बताया कि अभी सिर्फ पोस्टर लगा है। फिल्म आएगी तो देखूंगा और लिखूंगा भी। मैं जब भी देव आनंद साहब से मिलने उनके ऑफिस गया तो मैंने कभी बूढ़े देव आनंद के दर्शन नहीं किए। मुझे हर बार जोशो-खरोश, भरपूर ऊर्जा और प्यार से लबालब देव आनंद के दर्शन होते रहे। मैं जब उनकी तस्वीरें देखता तो उनकी उम्र उन पर हावी नजर आती पर मुझे लगता कि जिस देव आनंद को मैं देखता हूं वह तो एकदम जवान है। मुझे आज भी लगता है कि कैमरे के लैंस उनकी जवानी और ताजगी को पकड़ने में अक्षम थे। जिस उम्र में मैं उनसे मिलता रहा वह उनकी परिपक्व उम्र थी। पर तब भी मेरा हाल यह था कि उन्हें देखते ही नशा सा हो जाता था। मैंने उन्हें जब भी देखा एक दूल्हे की तरह सजा धजा देखा। उनकी धज में कभी कोई कमी नहीं देखी। उनके कपड़ों के रंग देखने लायक होते थे। जितने उजले उनके कपड़े थे उतना ही उजला उनका मन भी था। इतनी अनगिनत मुलाकातों में मैंने उनके चेहरे पर न उदासी देखी और न किसी प्रकार की मलिनता। तभी तो लोग उन्हें कहते थे, एवरग्रीन हीरो, सदाबहार देव आनंद!

कनाडा में सिर उठाता कट्टरपंथ भारत से संबंधों पर असर

भारत सरकार ने कनाडा को वहां बढ़ रही भारत-विरोधी ताकतों के खिलाफ चेतावनी दी थी। लेकिन कनाडा सरकार ने खालिस्तान जनमत संग्रह को अपने देश के कानूनी मानकों के भीतर शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक बताकर रोकने से इनकार कर दिया। भारत और कनाडा के संबंध खटाई में पड़ते नजर आ रहे हैं। दोनों देशों के बीच कड़वाहट बढ़ने की पूरी आशंका दिखाई दे रही है, क्योंकि भारत को लग रहा है कि कनाडा अपने देश में चल रही खालिस्तानी गतिविधियों पर नरम रुख अख्तियार कर रहा है। वैसे इस तरह की घटनाएं तो अनेक हुई हैं, लेकिन इनमें सबसे महत्वपूर्ण है 19 सितंबर को ब्रैंपटन, ओन्टारियो में संपन्न हुआ खालिस्तान जनमत संग्रह, जिसमें एक लाख से अधिक कनाडाई सिखों ने हिस्सा लिया। इसका आयोजन खालिस्तान समर्थक समूह सिख्स फॉर जस्टिस (एसएफजे) ने किया था, जिसमें बड़ी संख्या में पुरुष और महिलाएं वोट देने के लिए कतारों में खड़े थे और सोशल मीडिया ऐसी तस्वीरों से भरा पड़ा था। यह जनमत संग्रह 2020 में ही प्रस्तावित था, पर कोविड-19 के चलते इसे मुल्तवी करना पड़ा था। एसएफजे को भारत में 2019 में प्रतिबंधित कर दिया गया था। कनाडा में दस लाख से अधिक भारतीय रहते हैं। पंजाब के बाद यदि सबसे ज्यादा सिख कहीं बसते हैं, तो वह है कनाडा, जहां की 15 फीसदी आबादी सिख है। भारत सरकार ने कनाडा को वहां बढ़ रही भारत-विरोधी ताकतों के खिलाफ चेतावनी दी थी। लेकिन कनाडा सरकार ने खालिस्तान जनमत संग्रह को अपने देश के कानूनी मानकों के भीतर शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक बताकर रोकने

से इनकार कर दिया। चिंता की बात यह है कि अकेले कनाडा में ही नहीं, बल्कि कट्टरपंथी खालिस्तानी तत्व पूरे उत्तरी अमेरिका और यूरोप में भी अपनी विचारधारा के लिए राजनीतिक समर्थन पाने की कोशिश कर रहे हैं। विश्व सिख संगठन और सिख्स फॉर जस्टिस जैसे खालिस्तान समर्थक संगठनों की गतिविधियों के विश्लेषण से खालिस्तान मकसद के पुनरुद्धार के लिए धन संग्रह और सोशल मीडिया प्रचार जैसे प्रयासों का खुलासा हुआ है। एक सहानुभूतिपूर्ण राजनीतिक दृष्टिकोण ने सिख कट्टरपंथियों को 1984 के दंगों को 'नरसंहार' के रूप में घोषित करने, सिख समुदाय के आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए जनमत संग्रह करने और यहां तक कि खुले तौर पर भारत की आलोचना करने के लिए प्रोत्साहित किया है। कुछ भारतीय मूल के सांसदों ने खालिस्तान से जुड़े मुद्दों को उठाने से इनकार कर दिया है। इससे पहले अगस्त में सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास की दीवारों पर खालिस्तान के नारे लिखे पाए गए थे, यह घटना तब हुई, जब भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के मद्देनजर प्रतिबंधित खालिस्तानी समूह ने एक भड़काऊ बयान जारी किया। भारत में स्वतंत्रता दिवस समारोह से पहले, खालिस्तानी नेता गुरपतवंत सिंह पन्नू ने हाल ही में प्रमुख स्थानों पर खालिस्तानी झंडा फहराने के लिए नकद इनाम की घोषणा की। विदेशों में गुरुद्वारों से आने वाले धन ने पंजाब में अलगाववादी प्रयासों को आवश्यक ईंधन प्रदान किया है। यूरोप और उत्तरी अमेरिका में बैसाखी और सिखों के अन्य महत्वपूर्ण त्योहारों पर प्रवासी सिखों द्वारा गुरुद्वारों में किए गए असंख्य दान को सामाजिक कल्याण गतिविधियों की आड़ में पंजाब के खालिस्तान समर्थक संगठनों की ओर मोड़ दिया गया है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने ऐसे ही एक मामले में बब्बर खालसा अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी समूह से जुड़े सिख ऑर्गेनाइजेशन फॉर प्रिजनर वेलफेयर का पर्दाफाश किया है। इन संगठनों ने धन के प्रवाह को बनाए रखने के लिए नए तरीके ईजाद कर लिए हैं, जिनमें हवाला और कूरियर नेटवर्क का उपयोग शामिल है। खालिस्तान समर्थक गतिविधि ने फिर से 2014 में तब गति पकड़ी, जब दमदमी टकसाल ने ऑपरेशन ब्लू स्टार के दौरान मारे गए जरनैल सिंह भिंडरावाले और अन्य आतंकवादियों के लिए स्वर्ण मंदिर परिसर में एक स्मारक बनाया। राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के मुखर विरोध के बावजूद वे इस स्मारक के मुद्दे पर अड़े रहे। समय के साथ ये आपत्तियां समाप्त हो गईं। आज स्थिति यह है कि अकाल तख्त (जो सिख धर्म का सर्वोच्च स्थान है) के बगल में स्थित इस स्मारक पर रुके बिना स्वर्ण मंदिर की यात्रा अधूरी मानी जाती है। खालिस्तान की मांग दोहराने के पीछे की वजह 1984 में भारत के कुछ शहरों, खासकर दिल्ली में हुए नरसंहार को बताया जा रहा है। वह दंगा 31 अक्तूबर, 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की उनके सिख अंगरक्षकों द्वारा की गई हत्या के विरोध में हुआ था। उस नरसंहार के जिम्मेदार चंद कांग्रेसी नेताओं पर तत्काल कोई कानूनी कारवाई नहीं हुई थी। 1984 के आरोपियों पर अगर कोई कार्रवाई हुई, तो मौजूदा सरकार के शासनकाल में। इतने वर्षों में उस कांड के कई गवाह मर चुके है और इस वजह से अब कोई कानूनी कारवाई हो पाना बहुत मुश्किल है।

रूस-यूक्रेन युद्ध और पश्चिम की मुश्किलें

इंग्लैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण कोरिया आदि के साथ रूस को युद्ध के लिए जरूरी प्रौद्योगिकी के निर्यात पर प्रतिबंध तो लगाया ही है, रूसी बैंकों को भी प्रतिबंधित कर दिया है फरवरी, 2022 में जब से रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने यूक्रेन पर हमला किया, तबसे अमेरिका और उसके सहयोगी देशों सहित लगभग 50 देशों ने रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं। इन आर्थिक प्रतिबंधों में वस्तुओं की आवाजाही और

वित्तीय लेन-देन समेत आर्थिक व्यवहारों को प्रतिबंधित करने का प्रावधान है। इतिहास गवाह है कि कुछ मामलों को छोड़कर ये पश्चिमी देश प्रतिबंधों के माध्यम से अपनी बातें शेष विश्व से मनवाने का काम करते रहे हैं। यही नहीं, कई बार प्रतिबंध लगाने की धमकी मात्र से भी अमेरिका और उसके सहयोगी देश विश्व में अपना दबदबा बनाते रहे हैं। अमेरिका ने अपने सहयोगी राष्ट्रों, जैसे-यूरोपीय संघ, इंग्लैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण कोरिया आदि के साथ रूस को युद्ध के लिए जरूरी प्रौद्योगिकी के निर्यात पर प्रतिबंध तो लगाया ही है, रूसी बैंकों को भी प्रतिबंधित कर दिया है। यही नहीं, रूस के सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों के ऋणों, रूस से तेल एवं गैस के आयात को भी प्रतिबंधित किया गया है। अमेरिका ने रूसी जहाजों को भी अपने बंदरगाहों पर आने पर रोक लगा दी है। इन प्रतिबंधों के मद्देनजर हाल ही में पुतिन ने कहा कि यूरोपीय देश रूस पर प्रतिबंध लगाकर अपने नागरिकों के जीवन स्तर की बलि तो चढ़ा ही रहे हैं, दुनिया के गरीब मुल्कों की खाद्य सुरक्षा को भी खतरे में डाल रहे हैं। जो गरीब मुल्क खाद्य पदार्थों के लिए आयात पर निर्भर करते है, उनकी खाद्य आपूर्ति तो प्रभावित हो ही रही है, बढ़ती खाद्य कीमतों के चलते वे गरीब मुल्कों की पहुंच से भी दूर हो रही है। प्रतिबंधों के चलते बड़ी संख्या में अमेरिकी और यूरोपीय कंपनियां रूस छोड़ रही हैं। हालांकि रूस ने तकनीकी कारणों का हवाला देते हुए जर्मनी जाने वाली गैस पाइपलाइन बंद कर दी है, जिसके चलते यूरोपीय देश रूसी गैस और तेल पर अपनी निर्भरता घटाने की बात कर रहे हैं। पर यह भी सच है कि तेल और आवश्यक कच्चे माल के अभाव में यूरोपीय कंपनियां ठप हो रही हैं और यूरोप में रोजगार प्रभावित हो रहा है। गौरतलब है कि 'स्विफ्ट' नामक भुगतान प्रणाली से वैश्विक लेन-देन होता रहा है। लेकिन फरवरी, 2022 के बाद रूस को इस प्रणाली से बेदखल कर दिया गया। अमेरिका एवं उसके सहयोगी राष्ट्रों को यह उम्मीद थी कि रूस अपने निर्यातों का भुगतान प्राप्त नहीं कर पाएगा, तो उसे झुकना ही पड़ेगा। लेकिन अमेरिका और उसके सहयोगी देश अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके। रूस के निर्यात घटने के बजाय बढ़ ही गए। ताजा जानकारी के अनुसार, रूस को तेल और गैस के निर्यातों से ही इस साल 38 प्रतिशत अधिक प्राप्तियां होने वाली हैं। कहा जा सकता है कि रूस को अमेरिकी प्रतिबंधों से नुकसान कम, फायदा ज्यादा हो रहा है। आज अमेरिका और यूरोपीय देश भयंकर मंदी के खतरे और महंगाई से गुजर रहे है, और इसका एक प्रमुख कारण रूस को बताया जा रहा है। अमेरिका में पिछली दो तिमाहियों में जीडीपी घटी है और यूरोपीय देशों की भी हालत कुछ ऐसी ही है। कहा जा रहा है कि यूरोप में ऊर्जा संकट और सुस्त विकास के कारण मंदी का संकट स्पष्ट दिख रहा है। हालांकि, अभी अमेरिका की हालत, यूरोप जैसी नहीं है, लेकिन पिछली दो तिमाहियों में जीडीपी के संकुचन, बढ़ती मंहगाई और फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दर बढ़ाने की नीति के चलते अमेरिका भी मंदी की चपेट में आ सकता है। समझना होगा कि यूरोप अपनी तेल की जरूरतों के लिए 25 प्रतिशत तक रूस पर निर्भर करता है।

संक्षिप्त समाचार

गाजियाबाद हिंडन से अयोध्य प्रयागराज और लखनऊ के लिए भी जल्द शुरू होगी फ्लाइट

(आधुनिक समाचार सेवा)
गाजियाबाद । दिल्ली से शिमला की उड़ान सेवा शुरू होने के बाद हिंडन से अयोध्या, प्रयागराज और लखनऊ के लिए जल्द ही फ्लाइट शुरू होगी। इससे उत्तर प्रदेश में पर्यटन उद्योग में पंख लगने की उम्मीद है। हवाई सेवा शुरू होने से शिमला में भी पर्यटकों की संख्या में इजाफा होगा। दिल्ली-शिमला उड़ान सेवा बंद होने से पहले शिमला में प्रति वर्ष सात से आठ लाख सैलानी आते थे। उड़ान सेवा बंद होने के बाद सैलानियों की संख्या में कमी आई। यदि लखनऊ, अयोध्या और प्रयागराज के लिए उड़ान सेवा शुरू हो जाती है तो उत्तर प्रदेश में भी पर्यटन उद्योग को पंख लग जाएंगे। लखनऊ राजधानी होने के कारण गाजियाबाद तथा नोएडा सहित

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की बड़ी आबादी की आवाजाही होती है। जनरल वीके सिंह ने उत्तर प्रदेश के बड़े शहरों लिए हिंडन एयरपोर्ट से उड़ान सेवा एक वर्ष के भीतर शुरू करने का दावा किया है। वर्तमान में हिंडन एयरपोर्ट से दो शहरों के लिए उड़ान सेवा है। कर्नाटक के कलबुर्गी और हुबली के लिए नियमित उड़ान हैं। यहां जल्द ही अयोध्या, नासिक और कुशीनगर के लिए भी उड़ान प्रस्तावित है। एक साल बाद इन शहरों के लिए उड़ान शुरु होने की उम्मीद। अयोध्या में उड़ान सेवा शुरू होने का सबको को इंतजार है। धार्मिक यात्रा के लिए श्रद्धालु काफी समय से अयोध्या के लिए उड़ान सेवा शुरू कराने की मांग कर रहे हैं। जनरल वीके सिंह ने कहा अन्य शहरों के लिए उड़ान सेवा शुरू होने से पहले हिंडन एयरपोर्ट पर विमान पार्किंग पढ़ाने की जरूरत पड़ेगी। भविष्य में हिंडन एयरपोर्ट पर विमानों की पार्किंग को बढ़ाया जाएगा लेकिन एयरफोर्स स्टेशन की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए निर्णय लिया जाएगा।

भाजपा की साजिश का पर्दाफाश करेगा जदयू

(आधुनिक समाचार सेवा)
पटना ।सभी प्रखंडों में मंगलवार को जदयू सतर्कता एवं जागरूकता मार्च का आयोजन करेगा। जदयू प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने बताया कि भाजपा द्वारा सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने की साजिश का पर्दाफाश करने के निणय्र के तहत जागरूकता मार्च का आयोजन किया जा रहा है। पार्टी के सभी नेता व विधानमंडल दल के सदस्य के साथ प्रकोष्ठों के सभी पदाधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में इस मार्च में शामिल रहेंगे। जदयू प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा देश में सामाजिक और सांप्रदायिक सद्भाव बिगाड़ने में लगी है। इसके साथ ही संवैधानिक संस्थाओं को बर्बाद किया जा रहा है। महागठबंधन की सरकार बनने के बाद भाजपा पूरे देश में अलग-थलग पड़ गयी है। इधर वित्त मंत्री विजय कुमार चौधरी ने कहा है कि राज्यसभा सदस्य एवं पूर्व उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी अपने राजनीतिक पुनर्वास में राज्य का हित भूल गए हैं। वह राज्य का विरोध कर केंद्र का यशोगान कर रहे हैं। चौधरी ने कहा कि एक तरफ सुशील मोदी कहते हैं कि केंद्र सरकार को पैसा रोकने का अधिकार ही नहीं है। दूसरी तरफ विभिनन्न योजनाओं के लिए राशि

रोके जाने का अलग-अलग कारण या बहाना भी बताते हैं। रुपया रोकने का बहाना मोदी समझ सकते हैं। लेकिन, वह क्या करें। पुनर्वास की चुनौती भी तो है। उन्होंने कहा कि सुशील मोदी पुराने वित्त मंत्री के रूप में इतना ज्यादा पढ़ते-लिखते रहे हैं कि आंकड़े बताते हुए प्रसंग ही भूल जाते हैं। सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के तहत आवंटन की तिथि का उल्लेख हमारे कथन की पुष्टि ही करते हैं। स्वयं सिद्ध है कि नए वित्तीय वर्ष के पांच महीने बीत जाने तक केंद्र सरकार ने कोई राशि नहीं जारी की। चौधरी ने कहा कि उन्हें बताना तो यह चाहिए था कि पांच महीने तक आखिर केंद्र सरकार ने कोई आवंटन क्यों नहीं दिया।

महावीरी मेले का पताका लगाने के दौरान कार ने चार बच्चों को रौंदा

(आधुनिक समाचार सेवा)
रिविलगंज (सारण)।सारण जिले के रिविलगंज थाना क्षेत्र में नवरात्र

के पहले दिन महावीरी मेले का पताका लगाने के दौरान हुए सड़क हादसे में चार बच्चे गंभीर रूप से घायल हो गए। इनमें से दो की मौत हो गई। दो का इलाज पटना में चल रहा है। हादसा रिविलगंज थाना क्षेत्र के मेथवलिया गांव के समीप की है। हादसे के बाद लोगों ने मंगलवार सुबह सड़क जाम कर दिया। मृतकों में मेथवलिया गांव निवासी सुरेश राय के आठ वर्षीय पुत्र कृष्णा कुमार एवं नागेंद्र राय के आठ वर्षीय पुत्र सोहित राय शामिल हैं। वहीं जितेंद्र सिंह के 10 वर्षीय पुत्र रोहित कुमार एवं महेश सिंह के 10 वर्षीय पुत्र विक्की कुमार का इलाज कराया जा रहा है।

पटना में मेयर पद के सभी प्रत्याशियों के आवेदन सही, अन्य पदों के 19 का नामांकन रद

(आधुनिक समाचार सेवा)
पटना । पटना नगर निगम क्षेत्र में महापौर उप महापौर और वार्ड पार्षद पद के लिए किए गए नामांकन की जांच पूरी हो गई। महापौर पद के लिए 33, उपमहापौर के लिए 16 उम्?मीदवारों के नामांकन पत्र वैध पाए गए। वहीं चांदमारी रोड की अनिता चौहान ने डिप्टी मेयर प्रत्याशी के रूप में नामांकन पर्चा दाखिल किया था। आवेदन में त्रुटियों के चलते उनका नामांकन पत्र रद था। लेकिन उनका नामांकन रद कर दिया गया। कारण यह कि उनके पांच बच?चे हैं। 2008 के बाद उनके दो बच्चे हुए। वहीं एक महिला वार्ड पार्षद की उम्मीदवारी बाल-बाल बची।

और वार्ड पार्षद पद के लिए 503 अभ्यर्थियों के आवेदन वैद्य पाए गए। एक उपमहापौर और 18 वार्ड पार्षद उम्मीदवारों के आवेदन रद कर दिए गए। निर्वाची पदाधिकारी सह डीडीसी तनय सुल्तानिया की देखरेख में नामांकन पत्रों की जांच प्रक्रिया पूरी की गई। मेयर पद के लिए नामांकन करने वाले सभी कर दिया गया है। वहीं 18 वार्ड पार्षद प्रत्याशी भी चुनाव लड़ने से वंचित हो गए। अब 27 से 29 सितंबर के बीच नाम वापसी की समय सीमा के बाद मैदान में बचे प्रत याशियों की संख्या सामने आएगी। पटना नगर निगम के वार्ड 49 से मो. समीर ने नामांकन पत्र दाखिल किया प्रस्तावक की जन्म तिथि में अंतर पाए जाने के कारण ऐसी स्थिति उत्पनन्न हुई। मैट्रिक के मूल प्रमाण पत्र में जन्म तिथि सही पाए जाने के आधार पर नामांकन पत्र को वैद्य घोषित किया गया। नामांकन पत्र रद होने की सूचना के बाद महिला वार्ड पार्षद काफी परेशान हो गई थीं।

भंगेल व्यापार मंडल ने मनाई महाराजा अग्रसेन जयंती

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा । भंगेल सलारपुर व्यापार मंडल द्वारा सेक्टर 102 स्थित भंगेल में महाराज अग्रसेन की जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर व्यापार सभा अध्यक्ष मनोज गोयल एवं सपा महासचिव व प्रवक्ता राघवेंद्र दुबे ने व्यापारियों के साथ महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए व मिष्ठान न् फलों का भोग लगाया गया। आरती के बाद प्रसाद वितरित किया गया। इस अवसर पर व्यापार सभा अध्यक्ष मनोज गोयल ने कहा कि महाराजा अग्रसेन की जयंती आश्विन मास की प्रतिपदा को मनाया जाता है। कलयुग के प्रारंभ में महाराज अग्रसेन का जन्म हुआ था। इस अवसर पर बबलू चौहान,सतपाल गर्ग, मनोज कंसल, अरविंद गर्ग, शिव कुमार गोयल, अनिल जिंदल, विशाल गर्ग, पुष्पेंद्र बंसल, सुबोध गोयल, गौरव गोयल, प्रशांत गोयल, प्रमोद गुप्ता, राजीव गुप्ता, शिव शंकर गोयल, पंकज त्यागी, व्रजेश त्यागी, ज्ञान, ह्रदेश गोयल, विनोद सिंह, दीपांशु, गौरव गर्ग, मुकुल कंसल, मनोज कंसल सहित तमाम गणमान्य लोग एवं व्यापारी मौजूद रहे।

संजय शुक्ला को महासचिव बनने पर किया गया सम्मानित

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा ।सेक्टर 82 पाकेट 7 मे आज समाज वादी पार्टी के वरिष्ठ नेता संजय शुक्ला को आर डब्लूयू ए महासचिव बनने पर स्वागत किया गया। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ 71 के लोकप्रिय नेता बन गये है। इसी परिप्रेक्ष्य में आज सेक्टर 82 पाकेट 7 मे संजय शुक्ला को जीतने की खुशी में एक सम्मान समारोह का आयोजन सपा के युवा नेता पंकज झा के नेतृत्व में किया गया।

नेता संजय शुक्ला सेक्टर 71 के शिव शक्ति अपार्टमेंट मे पिछले दिनों हुए आर डब्लूयू ए के चुनाव मे महासचिव चुने गए। संजय शुक्ला सेक्टर 71 शिव शक्ति अपार्टमेंट के आर डब्लूयू ए के चुनाव मे लगातार दो बार से विजयी होकर महासचिव बन रहे है। लोगों का कहना है कि संजय शुक्ला बहुत ही ईमानदार एवं कर्मठ नेता है।इस समय सेक्टर जिसमे संजय शुक्ला को माला एवं विहार का पवित्र पाग पहना कर स्वागत किया गया। स्वागत करने वालों में सपा नेता पंकज झा, बलराम कुमार, रमेश चंद्र दास, संजय पाण्डेय, हरि शंकर सिंह, राजेश कुमार गुप्ता, हंस मणि शुक्ल, संगम प्रसाद मिश्र, प्रदीप तोमर, सर्वेश तिवारी, अजय सिह आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

ब्रम्हचारी कुटी में माता की स्थापना के साथ हुआ शैलपुत्री का पूजन

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा । सेक्टर 82 स्थित प्राचीन तपोभूमि ब्रम्हचारी कुटी में शारदीय नवरात्रि के प्रथम दिवस प्रातः मां दुर्गा की मूर्ति स्थापित की गई। शारदीय नवरात्रि में माता का नित्य पूजन होगा साथ ही दुर्गा सप्तशती का पाठ किया जाएगा। मंदिर परिसर में जहां मूर्ति स्थापित की गई है वहां पर रोजाना भजन

बोधगया के महंत 1008 रमेश गिरी महाराज के सानिध्य में पंडित मनोहर शास्त्री ने मां शैलपुत्री का मंत्रोच्चार के साथ विधिवत पूजन कराया। इस दौरान माता को पुष्प अर्पित कर भोग लगाया गया। भोग लगाने के बाद आरती की गई व प्रसाद वितरित किया गया इस अवसर पर आयोजन समिति के प्रवक्ता राघवेंद्र दुबे ने बताया कि कीर्तन के साथ माता की महिमा का वर्णन किया जाएगा। माता की आराधना से मनुष्य सभी कष्टों से छुटकारा पा जाता है और मनोवांछित फल को प्राप्त करता है। इस अवसर पर कुटी व्यवस्थापक विकास गिरी, अनमोल कुमार झा, अशोक कुमार, ओम कुशवाहा, नीरज कुमार सहित तमाम भक्तजन मौजूद रहे।

सेक्टर 46 मे 26 सितम्बर से होगा भव्य रामलीला का मंचन

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा ।श्रीराम लखन धार्मिक लीला कमेटी द्वारा प्रेस वार्ता को सम्बोधित करते हुये सदस्यों द्वारा अवगत कराया गया कि नोएडा सेक्टर-46 में नोएडा प्राधिकरण के सहयोग से श्रीराम लीला मंचन व विजय आकर्षक बनाने के लिये फूड स्टाल, बच्चों के लिये झूले एवं अन्य मनोरंजन के साधनों की व्यवस्था भी की गई है। श्रीराम लीला मंचन देखने के लिए बड़ी संख्या में नागरिक अपने परिवार के साथ लीला का आनंद लेंगे। श्रीराम लीला सांसद एवं पूर्व केन्द्रिय मंत्री डॉ महेश शर्मा, विधायक पंकज सिंह उत्तर प्रदेश महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती विमला बाथम, राज्य सभा सांसद सुरेन्द्र नागर, पूर्व केन्द्रिय मंत्री अशोक प्रधान, कैप्टन विकास गुप्ता राज्यमंत्री उ0प्र0 नवाब सिंह

दशमी महोत्सव का आयोजन किया जायेगा। इस वर्ष दिनांक 26.09.2022 से 05.10.2022 तक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा जिसमें नोएडा शहर के सभी गणमान्य नागरिक कार्यक्रम का आनंद लेंगे। संस्था के अध्यक्ष विपिन अग्रवाल ने बताया कि हमने श्रीराम लीला मंचन के लिये सभी औपचारिकतायें पूर्ण करते हुये प्रशासन से सभी आवश्यक अनुमतियां प्राप्त कर ली गई है। लीला स्थल पर सुरक्षा की दृष्टि से कैमरे एवं सुरक्षा की समुचित व्यवस्था कर ली गई हैं। श्री राम लीला आयोजन को और अधिक का संचालन पं कृष्ण स्वामी एवं उनके अनुभवी एवं सुप्रसिद्ध कलाकारों द्वारा किया जाएगा । 05.10.2022 को रावण, कुम्भकरण एवं मेघनाथ वध व उनके पुत्रों का दहन होगा। राम बारात का आयोजन 30.09.2022 को सैक्टर-46 के गेट नं0 1 से प्रारम्भ होकर बैंड बारात के साथ सेक्टर-46 में भ्रमण कर के लीला स्थल सैक्टर-46 पर सम्पनन्न होगी। इसी के साथ 30.09.2022 को श्री राम विवाह के उपलक्ष में डांडिया उत्सव का आयोजन भी किया जाएगा। श्रीराम लीला मंचन के समय संस्था के मुख्य संरक्षक मनोज अग्रवाल, नागर राज्यमंत्री उ0प्र0, रामगोपाल यादव राज्य सभा सांसद, नरेन्द्र भाटी सदस्य विधान परिषद उ0 प्र0, मदन चौहान पूर्व मंत्री उ0प्र0, राकेश यादव पूर्व सदस्य विधान परिषद। प्रेस वार्ता के समय महा सचिव विकास बंसल, कोषाध्यक्ष अनुज गुप्ता, संजय गोयल, राजेन्द्र जैन, पूनम सिंह, मुकेश गुप्ता, संदीप अग्रवाल, अशोक अग्रवाल, पं0 कृष्ण स्वामी, सुभाष चन्द्र शर्मा, आलोक गुप्ता, रामवीर यादव, सुशील सिंघल, प्रदीप अग्रवाल, सुरेश गुप्ता, अमीश राजवंशी मनीष अग्रवाल, बलराज गोयल, कुलदीप गुप्ता, सौरभ अग्रवाल एवं संस्था के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहेगें।

गाजियाबाद में पति ने पत्नी को गोली मारी फिर दो साल का बच्चा छीन कर फरार

(आधुनिक समाचार सेवा)
गाजियाबाद । मसूरी थाना क्षेत्र के काजीपुरा में सोमवार शाम एक पति अपनी पतने को गोली मारकर दो साल का बच्चा छीन ले गया। गोली महिला के बायें हाथ में लगी और वह घायल होकर गिर पड़ी। आरोपित पति अपने दो साथियों के साथ बाइक से वेवसिटी की तरफ फरार हो गया। वहीं महिला को घायल अवस्था में निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यहां देर रात तक उनका आपरेशन चल रहा था। मामले में अभी पुलिस को तहरीर नहीं दी गई है। पुलिस का कहना है कि महिला मामले में तहरीर देने की बात कह रही थीं। आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की तीन टीमों का गठन किया गया है।काजीपुरा गांव की संजना की शादी पूर्व में चिपियाना के एक युवक से हुई थी। विवाद के चलते दोनों का तलाक हो गया था। तीन वर्ष पूर्व संजना की शादी मुजफ्फरनगर के सिसौली के पुष्पेंद्र उर्फ कपिल से हुई थी। पुष्पेंद्र से संजना के पास दो साल का बेटा शिवांश है। शादी

के एक साल बाद पति-पतने के बीच विवाद हो गया था। इसके चलते पिछले दो साल से संजना मायके काजीपुरा में रह रही थी। सोमवार शाम करीब सवा छह बजे संजना शिवांश को गोदी में लेकर घर के बाहर खड़ी हुई थीं। इस दौरान पुष्पेंद्र उर्फ कपिल अपने दो साथियों के साथ एक बाइक पर आया और संजना से शिवांश को छीनने लगा। संजना ने विरोध किया तो पुष्पेंद्र ने तमंचा निकालकर गोली चला दी। गोली संजना के बायें हाथ में लगी और वही घायल होकर नीचे गिर पड़ी। गोली की आवाज सुनकर गांव के लोगों में हड़कंप मच गया और स्वजन भागकर बाहर आए। तब तक पुष्पेंद्र शिवांश को लेकर फरार हो चुका था। आनन-फानन में स्वजन ने संजना को निजी अस्पताल में भर्ती कराया। मौके पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल की जांच की। एसपी देहात डा. ईरज राजा ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। आरोपितों की तलाश में पुलिस की तीन टीमों का गठन किया गया है। जल्द ही आरोपितों को गिरफ्तार किया जाएगा।पुष्पेंद्र के झूठ बोलने की आदत के कारण हुआ था विवादसंजना के भाई वरुण गाजियाबाद कचहरी में अधिवक्ता हैं।

26 से होगी रामलीला प्रारंभ, 70 फिट का होगा रावण का पुतला

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। श्री सनातन धर्म रामलीला समिति द्वारा प्रेसवार्ता को सम्बोधित करते हुए समिति के सदस्यों ने बताया कि पिछले 36 वर्षों से नोएडा शहर में नोएडा प्राधिकरण के सहयोग से रामलीला

मंचन एवं विजय दशमी महोत्सव का आयोजन रामलीला ग्राउंड, नोएडा स्टेडियम, सेक्टर-21ए, नोएडा में करते आ रहे हैं। श्री सनातन धर्म रामलीला समिति के महासचिव संजय वाली ने बताया कि इस वर्ष रामलीला का आयोजन 26 सितंबर से 06 अक्टूबर तक किया जायेगा। जिसमें शहर के सभी गणमान्य नागरिक इस आयोजन में बढ़ चढकर हिस्सा लेते है। इसीलिए इस आयोजन को सफलता प्रदान होती है। इस वर्ष 37 वर्ष के प्रयास करते हुए दिल्ली एवं मुम्बई के प्रसिद्ध टीवी व फिल्मी कलाकारों द्वारा रामलीला मंचन किया जायेगा। जिसमें दशहरा (05.10.2022) को रावण, कुंभकरण, मेघनाथ के पुतलों का दहन होगा और अगले दिन 06.10.2022 को भरत मिलाप के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम के इस वर्ष की लीला का विश्राम होगा। रामलीला मंचन का शुभारम्भ दिनांक 26.9.2022 को सायं 7 बजे गणेश पूजन के साथ प्रारम्भ होगा जिसमें राम बरात का आयोजन 29.9.2022 को सैक्टर 12 वी व डब्लू ब्लाक के सामने शिव मंदिर को किया जायेगा। जिसमें संस्था के मुख्य संरक्षक डा महेश शर्मा, सांसद एवं पूर्व मंत्री भारत सरकार, नोएडा विधायक पकंज सिंह, उ0प्र0 महिला आयोग अध्यक्ष बिमला बाथम, गरिमामयी उपस्थिति डा0 वी एस चैहान, आनन्द चैरसिया, कार्यक्रम अध्यक्ष सुनील गुप्ता, स्वागत अध्यक्ष पीयूष द्विवेदी, कार्यक्रम संयोजक मधूसुदन दादू उपस्थित रहेगें। संस्था के अध्यक्ष पीएन चौरसिया ने बताया कि हमने प्रशासन द्वारा सभी अनुमतियां प्राप्त कर ली गयी है। मंच की सजावट का कार्य पूर्ण किया जा रहा है सुरक्षा व्यवस्था को देखते हुए सीसीटीवी कैमरे, सुरक्षाकर्मी, स्वयं सवेक, संस्था के सदस्य/ पदाधिकारी सभी व्यवस्थाओं को देखेंगें। पूरे आयोजन के दौरान खाने पीने का फूड स्टॉल, झूला मेला, सर्कस, फायर क्रैकर शो का भी आयोजन किया जायेगा। रामलीला मंचन देखने के लिए प्रतिदिन हजारों की संख्या में लोग स्टेडियम में आते हैं और विजय दशमी (दशहरा) के दिन वीआईपी अतिथियों, अधिकारी, प्रमुख व्यक्ति सहित समारोह में लाखों की संख्या में नागरिक शामिल होंगे। इस अवसर पर चेयरमैन डा. टी.एन. गोविल, अध्यक्ष टी. एन. चैरसिया, कार्यकारी अध्यक्ष सुशील भारद्वाज, महासचिव संजय बाली, वरिष्ठ उपाध्यक्ष रमेश कुमार, एसकेएस राणा, सत्यनारायण गोयल, पंकज जिंदल, एन के अग्रवाल, उपाध्यक्ष, मित्रा शर्मा, विपिन बंसल, केषव गंगल, अतुल मित्तल, राजीव गर्ग, लोकेष कष्यप, अनूप षर्मा, यष नागर, पी.के. गुप्ता, राजेष भारद्वाज, अनिल गुप्ता, प्रदीप अग्रवाल, संजय गुप्ता, कोषाध्यक्ष अल्पेश गर्ग, सचिव विनय शर्मा, सौरभ गोविल, महेन्द्र कटारिया, विकास जैन, पवनदीप , सुन्दर सिंह राणा, महिमा मित्तल, आलोक वत्स, प्रवीन बंसल, विपिन मल्हन, योगेन्द्र शर्मा, चन्द्रपाल सिंह प्रमोद रंगा, निखिल गुपत, रोहित श्रीवास्तव, डा.एस.पी. जैन, रामकुमार शर्मा, मोहित ढिंगरा आदि समित के सदस्य उपस्थित रहें।

वरुण धवन ने अल्लू अर्जुन के श्रीवल्ली स्टेप को किया कॉपी, कहा- साउथ के हीरो फाड़

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। वरुण धवन ने अल्लू अर्जुन के श्रीवल्ली स्टेप को कॉपी करने का प्रयास किया है। दरअसल ऐसा वह अमेजन प्राइम वीडियो के लेटेस्ट वीडियो में करते नजर आ रहे हैं। इसके पीछे उन्होंने कारण यह दिया है कि वह दक्षिण के कलाकारों से कम नहीं है दरअसल अमेजन प्राइम वीडियो ने अपनी आगामी प्रमोशन स्ट्रेटजी के अंतर्गत वरुण धवन को लेकर एक वीडियो शूट किया है। इसमें वह उनके साथ काम करने की योजना बना रहे हैं। वह अमेजन प्राइम वीडियो शो से जुड़ी जानकारी जुटाने का प्रयास कर रहे हैं। इस दौरान वह कई चीजें करते है वरुण धवन इस बात को साबित करने का प्रयास करते हैं कि वह दक्षिण भारत के कलाकारों से अच्छा डांस करते हैं। ऐसा करते समय वरुण धवन अल्लू अर्जुन के श्रीवल्ली गाने के हुक स्टेप को कॉपी करने का प्रयास करते हैं। वह यह भी कहते हैं कि साउथ के हीरो फाड़ रहे हैं। गौरतलब है कि हाल ही दिनों में साउथ की कई फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा व्यापार किया है। पुष्पा द राइज फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ व्यापार किया है। वहीं जल्द इस फ़िल्मका अगला भाग भी बनकर रिलीज होने वाला है। वरुण धवन फिल्म अभिनेता है। उन्होंने कई फिल्मों में काम किया है। उनकी फिल्में काफी पसंद की गई हैं। उनकी जल्द फिल्म भेड़िया रिलीज होने वाली है। इस फिल्म की शूटिंग पूरी हो गई है। वह इस फिल्म को लेकर बहुत उत्साहित है। वरुण धवन की फिल्में बॉक्स ऑफिस पर अच्छा व्यापार करती है। उन्होंने कई कलाकारों के साथ काम किया है। वहीं वह रोमांस के अलावा कॉमेडी और एक्शन फिल्में करते है।

तुषार कालिया ने अपने नाम किया 'खतरों के खिलाड़ी 12' का खिताब, फैजल शेख बने रनर अप

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। टीवी के सबसे पॉपुलर रिएलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी 12' को अपना विनर मिल चुका है । तुषार कालिया ने इस खिताब को अपने नाम किया । इस बार फिनाले में टॉप कंटेस्टेंट्स में तुषार कालिया, जनन्त जुबैर, फैजल शेख, मोहित मलिक, रुबीना दिलैक ने अपनी जगह बनाई थी । बता दें कि इससे पहले जब फिनाले का शूटिंग मुंबई में हुई थी तब भी तुषार का ही नाम सामने आया था। विजेता को दी जाने वाली कार की चाबी के साथ उनकी फोटो वायरल हुई थी। कयास लगाए जाने लगे कि उन्होंने शो जीत लिया है। खतरों के खिलाड़ी 12 का ग्रैंड फिनाले हर बार की तरह इस बार सबसे अलग और बेहद खास रहा। रोहित शेट्टी ने अपने शो में अपनी आने वाली फिल्म 'सर्कस' के एक्टर्स रणवीर सिंह, पूजा हेगड़े, वरुण शर्मा, संजय मिश्रा, सिद्धार्थ जाधव और जॉनी लीवर को गेस्ट के तौर पर शामिल किया। तुषार कालिया ने चमचमाती ट्रॉफी के साथ 20 लाख रुपये की प्राइज मनी भी जीती है। इसके अलावा एक भी अपने नाम की। तुषार कालिया अपनी जीत से खुश हैं। तुषार कालिया बॉलीवुड के जाने माने कोरियोग्राफ है। वह 'इंडियाज गॉट टैलेंट' और 'डांस दीवाने' जैसे रियलिटी शोज को जज कर चुके हैं। तुषार कालिया ने इसी साल अपनी गर्लफ्रेंड त्रिवेणी बर्मन से सगाई की थी। तुषार की मंगेतर त्रिवेणी बर्मन असम की मॉडल हैं। त्रिवेणी ने साल 2017 में 'फेमिना मिस इंडिया' का खिताब भी जीता था।

अक्षय कुमार ने बेटी नितारा को दी जन्मदिन की शुभकामनाएं वीडियो शेयर कर कही ये बात

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। अक्षय कुमार और ट्विंकल खनन की लाडली नितारा आज 10 साल की हो गई हैं। इस मौके पर अभिनेता ने अपनी बेटी जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए पकड़ने से लेकर अब अपना शॉपिंग बैग रखने तक, मेरी बच्ची बहुत तेजी से बड़ी हो रही है। आज पूरे 10 साल की हो गई है इस बर्थडे के लिए मेरी शुभकामनाएं और हमेश... दुनिया की सबसे अच्छी उनकी 5 से 6 फिल्में रिलीज होती हैं। वो जल्द ही मोस्ट अवेटेड फिल्म राम सेतु में नजर आने वाले हैं। राम सेतु रामायण के दिनों में भारतीय संस्कृति की प्राचीन पौराणिक कलाकृतियों की खोज

एक इमोशनल पोस्ट साझा की है और उन्होंने बताया है कि उनकी बच्ची तेजी से बड़ी हो रही है। इस वीडियो को शुरुआत में नितारा अपने पिता संग रेत के टीलों पर चढ़ती हुई दिख रही हैं और अगले ही पल अपने हाथों में शॉपिंग बैग लिए हुए नजर आ रही हैं।इस प्यार भरी वीडियो को शेयर कर अक्षय कुमार ने कैप्शन लिखा, मेरा हाथ पेशकश है। हाल ही में उन्होंने अपनी बेटी के साथ एक वीडियो साझा किया था, इस वीडियो में पिता-पुत्री की जोड़ी अपने हाथों में बड़े-बड़े टेडी बियर लिए हुए हैं। वीडियो में अक्षय फनी अंदाज दिखाते हुए अपने सर पर सॉफ्ड टॉय रखकर चलते हुए दिख रहे हैं। वहीं, बात अगर अक्षय कुमार के वर्कफ्रंट की करें तो वो एक साल में पर आधारित होगी। ये देश की जड़ों और आस्था और आध्यात्मिक मान्यताओं का उत्सव है। राम सेतु में अक्षय में कलाकृतियों का पता लगाने के वाले आकिर्योलॉजिस्ट का कैरेक्टर निभा रहे हैं, जो गुफा से रास्ते से राम सेतु की लोकेशन तक पहुंचते हुए दिखाई देंगे।

पूजा हेगड़े ने भरी महफिल में रणवीर सिंह को कहा बॉलीवुड की 'पम्मी आंटी', एक्टर ने दिया ऐसा रिएक्शन

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। खतरों के खिलाड़ी सीजन 12 का 25 सितंबर को ग्रैंड फिनाले होने जा रहा है। जहां इस सीजन के सभी कंटेस्टेंट्स शिरकत करने वाले हैं। शो के होस्ट रोहित शेट्टी ने अपने खास मेहमानों को की पम्मी आंटी बताते हुए दिख रही हैं। दरअसल, शो के फिनाले एपिसोड में रणवीर ने बताया कि उन्होंने पूरा शो देखा है और वह सभी कंटेस्टेंट के बारे में बता भी सकते हैं। उन्होंने पहले रुबीना को निशाना बनाया और बताया कि हर स्टंट के दौरान उन्होंने खुलासा किया कि रणवीर बॉलीवुड के पम्मी आंटी हैं क्योंकि उन्हें लगभग हर किसी के बारे में पता होता है, वह सबकी कुंडली अपने पास रखते हैं। इस पर एक्टर पम्मी आंटी की एक्टिंग भी करते हैं। यहां देखें रणवीर का यह

भी शो में बुलाया है। इनमें उनकी फिल्म सर्कस के एक्टर रणवीर सिंह और पूजा हेगड़े शामिल हैं। ग्रैंड फिनाले एपिसोड में कंटेस्टेंट्स के साथ रणवीर सिंह ने खूब मस्ती की और उनकी जमकर टांग खिचाई भी की। खतरों के खिलाड़ी के ग्रैंड फिनाले का एक वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है। जिसमें पूजा हेगड़े रणवीर सिंह को बॉलीवुड उनके अंदर गाडि़यों की आत्मा आ जाती हैं और वह उनकी आवाज निकालने लगती हैं। इसके बाद वह मोहित मलिक के पास पहुंच गए और उनके दिल फेक अंदाज पर उनकी टांग खिचाई कर दी। रणवीर ने कहा कि मोहित यहां तो चूहा हैं, लेकिन बाहर बिल्कुल आजाद घूमते हैं। रणवीर ये बातें सुन पूजा हेगड़े खुद को रोक न पाई और मजेदार वीडियो, शो के ग्रैंड फिनाले की बात करें तो टॉप 5 कंटेस्टेंट की लिस्ट में रुबीना दिलैक, जनन्त जुबैर, फैजल शेख, मोहित मलिक और तुषार कालिया के नाम शामिल हैं और उनमें से एक शो का विनर बनेगा। शो का पहला एपिसोड 2 जुलाई 2023 को टेलीकास्ट किया गया था और अब दो महीने बाद केकेके 12 को आज अपना विनर भी मिल जाएगा।

द फैमिली मैन में जोया की भूमिका निभाने वाली एक्ट्रेस का खुलासा

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। द फैमिली मैन में जोया की भूमिका निभाने वाले श्रेया धनवंतरी ने खुलासा किया है कि वह अपनी पहली फिल्म से पहले लगभग बेघर हो गई थी उन्होंने यह भी कहा कि वह पिछले 10 वर्षों से मनोरंजन इंडस्ट्री लौट आई हालांकि उन्हें एक्ट्रेस बनना था इसके चलते उन्होंने मनोरंजन इंडस्ट्री पर फोकस किया श्रेया धनवंतरी ने एक इंटरव्यू में खुलासा किया है कि यह बहुत ही चुनौतीपूर्ण था वह कहती है, 'फिल्मों में काम करना मेरा लक्ष्य थात् मैंने

में संघर्ष कर रही हैं उन्होंने आगे यह भी कहा कि अब भी वह लगातार संघर्ष कर रही हैं और बहुत दूर तक आई है श्रेया धनवंतरी की हाल ही में फिल्म चुप रिवेंज आफ द आर्टिस्ट रिलीज हुई है उन्होंने अब खुलासा किया कि अपने जीवन में उन्होंने लंबा संघर्ष किया है उन्होंने यह भी कहा कि एक दौर ऐसा भी था, जब वह वित्तीय परेशानी से जूझ रही थी और बेघर होने वाली थीत् श्रेया धनवंतरी अपने माता-पिता के साथ दुबई, बहरीन और कतर भी गई इसके बाद वह इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के लिए भारत वापस इस सीक्रेट को अपने पास छुपाकर रखा था अब मुझे विश्वास नहीं होता कि मैं यहां आ गई हूं श्रेया ने आगे कहा, 'आप यह मत पूछो कि मैंने कैसे किया मैं यहां कैसे रही मैं अभी भी रह रही हूं मेरे पास पैसे नहीं थे मैं बेघर होनेवाली थी मुझे भूखा रहना पड़ता था मुझे पता नहीं मैंने कैसे कर दिया लगता है मैं थोड़ी साइको हूं श्रेया धनवंतरी ने मिस इंडिया 2008 में भी भाग लिया था वह फाइनलिस्ट थी इसके बाद वह तेलुगू फिल्म जोश में भी नजर आई थी फिर उन्होंने 10 वर्ष बाद बॉलीवुड फिल्म में डेब्यू किया।

अक्षय कुमार ने दिए संकेत, सोमवार को रिलीज हो सकता है 'राम सेतु' का टीजर

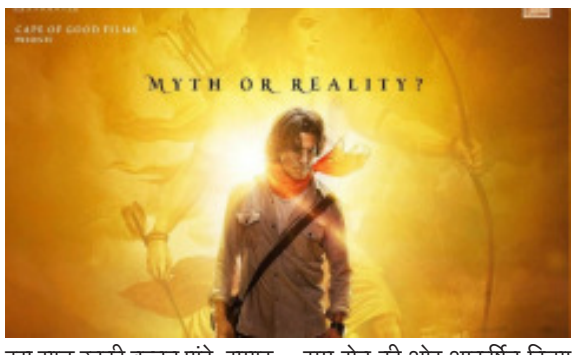

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। बॉलीवुड के खिलाड़ी अक्षय कुमार एक साल में कई फिल्में रिलीज होती हैं और उनकी लगभग सभी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर 100 रुपए के आसपास बिजनेस करती हैं, लेकिन साल 2022 उनके लिए कुछ खास साबित नहीं हुआ है। सकता है। वहीं, कुछ दिनों पहले सोशल मीडिया पर चर्चाएं थीं कि अक्षय कुमार की इस फिल्म से सोमवार को राम सेतु का मोशन पोस्टर या टीजर रिलीज किया जा सकता है, जिसमें फिल्म के कुछ चुनिंदा एक्शन-एडवेंचर दृश्यों को दिखाया जाएगा, जिससे दर्शकों को

इस साल उनकी बच्चन पांडे, सम्राट पृथ्वीराज और रक्षा बंधन जैसी फिल्में रिलीज हो चुकी हैं, लेकिन कोई भी फिल्म एक हफ्ते से ज्यादा नहीं टिक पाई और अब उन्होंने अपने मोस्ट अवेटेड फिल्म राम सेतु से काफी उम्मीदें हैं। अब अक्षय कुमार ने अपनी बेटी नितारा के बर्थडे के मौके पर एक पोस्ट साझा कर एलान किया है कि कल यानी सोमवार को राम सेतु से जुडा़ कुछ स्पेशल ला रहे हैं। अभिनेता की ये पोस्ट सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर कयासों का भी दौर शुरू हो गया है, जिसमें कई फैंस दावा कर रहे हैं कि सोमवार को फिल्म का टीजर या फर्स्ट लुक मोशन पोस्टर रिलीज किया जा राम सेतु की ओर आकर्षित किया जा सके। अभिषेक शर्मा के निर्देशन में बन रही इस फिल्म की कहानी रामायण के दिनों में स्थापित भारतीय संस्कृति की प्राचीन एवं पौराणिक कलाकृतियों की खोज पर आधारित होगी। ये फिल्म देश की जड़ों, आस्था और आध्यात्मिक मान्यताओं के उत्सव को दर्शाएगी। इस पौराणिक फिल्म में अक्षय कुमार पुरात्व विभाग में काम करने वाले आर्कियोलॉजिस्ट का कैरेक्टर निभा रहे हैं। राम सेतु में अक्षय कुमार के अलावा एक्ट्रेस जैकलीन फर्नांडिज और नुसरत भरूचा भी नजर आने वाली हैं। ये फिल्म दिवाली के मौके पर सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

मुकेश खन्ना ने एकता कपूर के टीवी सीरियल्स पर साधा निशाना

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली।शक्तिमान फेम अभिनेता मुकेश खनन (श्लुवेप् र्खेह्हर्ई) एक्टिंग के अलावा अपनी बेबाकी के लिए भी खूब जाने जाते हैं। आए दिन एक्टर अलग-अलग मुद्दों पर अपनी राय रखते रहते हैं। एक बार फिर कुछ ऐसा ही हुआ है। इस बार एक्टर ने टीवी क्वीन एकता कपूर (ूँ र्ख्ज्ददे) पर निशाना साधा है। उन्होंने एकता के सास-बहू टीवी सीरियल्स को लेकर बात की है और उनपर सत्यानाश करने का आरोप लगाया है। मुकेश खनन ने अपने यूट्यूब चैनल पर वीडियो शेयर किया है, जिसमें उन्होंने अभिनेता पंकज बेरी के एक स्टेटमेंट का जिक्र करते हुए कहते हैं, ङ्खपंकज बेरी की ये बात मुझे पसंद आई है कि सास-बहू के बीच कहीं खो गई है हमारी

टीवी इंडस्ट्री.ङ्ग आगे वो कहते हैं, ङ्खइस बात को मैंने 6 साल पहले ही कहा था कि एकता कपूर तुमने सास-बहू बनाकर टीवी का सत्यानाश कर दिया और इस बात को मैं फिर से दोहराता हूं और मुझे फिर से बोलने का मन हुआ है। ये वीडियो 5 मिनट 14 सेकेंड का जिसमे उन्होंने और भी कई बाते कही हैं। मुकेश खनन के वर्कफ्रंट की बात करें तो उन्होंने कई टीवी शोज और फिल्मों में काम किया हैं। शक्तिमान, वारिश, विश्वामित्र, महायोद्धा, चंद्रकांता जैस हिट शोज कर चुके हैं। हाल ही में खबर सामने आई थी कि मुकेश खनन के मशहूर शो 'शक्तिमान' पर फिल्म बनाने वाली है। अभी तक इसके स्टारकास्ट के बारे में जानकारी नहीं आई है। बता दें ये शो सबसे पहले 13 सितंबर 1997 को टेलीकास्ट हुआ और 2005 तक चला था।

साथ निभाना साथिया 2 फेम यह एक्टर बना बिग बॉस का पहला कंफर्म कंटेस्टेंट

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। सलमान खान के कॉन्ट्रोवशिऱ्यल रियलिटी शो बिग बॉस के 16वें सीजन का जल्द ही आगाज होने वाला है। साथ ही इस बार बिग बॉस के घर में नजर आने वाले कंटेस्टेंट के नामों पर भी चर्चे तेज हो गई है। इसी बीच एक कंफर्म कंटेस्टेंट का नाम गलती से लीक हो गया है। टीवी के इस पॉपुलर एक्टर के बारे में सुनकर फैंस के तो होश ही उड़ गए। 1 अक्टूबर से शुरू हो रहे बिग बॉस 16 के पहले कंटेस्टेंट हैं साथ निभाना साथिया 2 फेम गौतम सिंह विग। छोटे पर्दे पर गौतम काफी पॉपुलर हैं उन्हें आपने पिंजरा खूबसूरती का, तंत्र, नामकरण और इश्क सुभान अल्लाह जैसे लोकप्रिय

टीवी शो में देखा है। इन्होंने एक मॉडल के तौर पर अपना करियर शुरू किया और अब पिछले 6 सालों से छोटे पर्दे पर नजर आ रहे हैं। हालांकि आधिकारिक तौर पर भी तक किसी भी कंफर्म कंटेस्टेंट का नाम सामने नहीं आया है। लेकिन इस सीजन में जिनके नाम पर सबसे ज्यादा चर्चा हो रही है वो हैं फिल्म निर्माता साजिद खान, सोशल मीडिया सनसनी जस्ट सुल, एक्ट्रेस श्रीजिता डे, इमली फेम सुंबुल तौकीर, कुबूल है फेम सुरभि ज्योति। तो वही मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो इस बार घर में तीन एक्स कंटेस्टेंट भी एंट्री करने वाले हैं। जी हां हर बार की तरह इस बार भी एक्स कंटेस्टेंट शो में तड़का लगाने के लिए पहुंचेगे। जिसमें से एक नाम हिना खान का है।

फिल्मों में बंगाली बाला की भूमिकाएं निभा चुकी एक्ट्रेस की ड्रेस से नहीं हटेगी नजर

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। दुर्गा पूजा 1 अक्टूबर से पूरे देश में जोरों-शोरों से मनानी शुरू की जाएगी। बॉलीवुड की कई उनके एथनिक लुक को काफी पसंद किया गया था। उन्होंने गोल्ड ज्वेलरी भी पहन रखी है। विद्या बालन ने फिल्म परिणीति और कपड़ों के कारण वह भूमिका में काफी जंच रही थी। इस फिल्म में इरफान खान ने भी अहम रोल निभाया था।

हिंदी फिल्मों में बंगाली कल्चर को दिखाया गया है। इन फिल्मों के निर्माताओं ने इन भूमिकाओं के लिए कड़ी मेहनत और ध्यान से भूमिकाओं को बनाया था। अब हम आपके लिए बॉलीवुड की फिल्मों में बंगाली भूमिकाएं निभा चुकी बेस्ट एक्ट्रेस के लुक लेकर आए हैं, जिन्हें काफी पसंद किया गया था। ऐश्वर्या राय बच्चन ने संजय लीला भंसाली की फिल्म देवदास में बंगाली बाला की भूमिका निभाई थी। ऐश्वर्या के इस लुक को काफी पसंद किया गया था। इस फिल्म में वह एक अमीर जमींदार से शादी कर लेती है। इस फिल्म में उनके अलावा माधुरी दीक्षित और शाह रुख खान की भी अहम भूमिका थी। अभिनेत्री तृप्ति डिमरी ने बुलबुल नामक फिल्म में बंगाली महिला की भूमिका निभाई थी। इसमें से अपना डेब्यू किया था। इस फिल्म में उन्होंने एक खूबसूरत बंगाली महिला की भूमिका निभाई थी। इसमें उनके लुक को काफी पसंद किया गया था। इसके अलावा उन्होंने फिल्म कहानी में भी काम किया था और इस फिल्म में भी उन्होंने शानदार भूमिका निभाई थी। वहीं उनके लुक को भी काफी पसंद किया गया था। सोनाक्षी सिन्हा ने फिल्म लुटेरे में बंगाली लड़की की भूमिका निभाई थी। इस फिल्म में उनके अलावा रणवीर सिंह की अहम भूमिका थी। इस फिल्म को क्रिटिक्स ने काफी सराहा था। वहीं इस फिल्म के गाने आज भी सुने जाते है। दीपिका पादुकोण ने सुजीत सरकार के फिल्म पिकू में बंगाली बाला की भूमिका निभाई थी। उन्होंने ट्रेडिशनल बंगाली लुक तो नहीं धारण किया था। हालांकि बिंदी

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।